Chap-2

-=: अध्याय-2 :=-

-=: साठोत्तरी काव्य में बिम्ब और प्रतीक योजना :=-

-- बिम्ब और प्रतीक ।

-- मिथकीय बिम्ब और कथ्याभिप्राय ।

-- प्रासंगिक संदर्भों में आख्यानक बिम्ब एवं प्रतीक ।

-- साठोत्तरी हिन्दी कविता का आख्यानक शिल्प ।

नयी कविता में बिम्ब को सर्वोपरि महत्त्व देने का श्रेय बिम्बवादी आन्दोलन को है । बिम्ब अंग्रेजी शब्द "इमेज" का पर्यायवाची माना गया है । हिन्दी साहित्य में इसका प्रचलन रूप विधान और चित्र विधान के रूप में रहा है । वस्तुतः यह अलंकारों के वृत्त में ही समाविष्ट है, नयी कविता में इसे भारतीय काव्य शास्त्र के अनुसार अलंकार ही बिम्ब विधान माना गया है, और इसे स्वतन्त्र सत्ता प्रदान की गई है, बिम्ब के स्वरूप के विषय में "स्टेफेन जे ब्राउन" का कथन है, साहित्य में बिम्ब से तात्पर्य कलाकार की उस क्षमता से है जिसके सहारे वह बीती हुई घटनाओं और विषय-वस्तु का ध्वनि, गति, आकार प्रकार सहित देश काल परिस्थिति को ध्यान में रखकर शब्द चित्रों में वर्णित कर देता है, और शब्द चित्र ठीक उसी प्रकार का होता है, जैसे कि उस घटना या वस्तु का स्वरूप था । (1)

हिन्दी काव्य-शास्त्र की परिभाषा में बिम्ब विधान प्रस्तुत अप्रस्तुत योजना का ही रूप था, जिसे इलियट ने "आब्जेक्टिव का रिलेटिव" कहा है । (2)

आदि काल से ही भाषा के दो रूप माने गये है, संकेतात्मक तथा बिम्ब विधायक । आगे चलकर चित्र भाषा ने बिम्ब विधायक भाषा का स्थान ग्रहण कर लिया । (3)

वस्तुतः बिम्ब एक प्रकार का चित्र या हुबहू प्रतिबिम्ब पाठक या श्रोता के मस्तिष्क में खींचता है ।

---

(1) डिफेन्स ऑफ पोयट्री, पी.वी.शैली, एच.ए.निधम, लन्दन - 1948 द्वितीय संस्करण - पृ0 95.

(2) धी सेक्रेडवुड टी.एस.इलियट - पृ0- 120 त्रिशंकु सं.अज्ञेय, सरस्वती प्रेस बनारस - 1954 प्रथम संस्करण.

(3) कैलाश बाजपेयी, आधुनिक कविता में शिल्प - पृ0- 69 तीसरा सप्तक सं. अज्ञेय भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन- दिल्ली - 1984 प्रथम संस्करण.

आज के कवियों ने भी विज्ञान, प्रकृति, मनोविज्ञान, धर्म, लोक-साहित्य, इतिहास आदि क्षेत्रों से बिम्बों का चयन किया है, लोक साहित्य, धर्म पुराण और इतिहास के खण्डहरों में बहुत से अज्ञात प्रतीक और अदृश्य बिम्ब मिलते है । जिनकी खोज के द्वारा नई कविता की संभावना का पथ और भी प्रशस्त किया जा सकता है । §1§

बिम्ब निर्माण की प्रक्रिया में भाव §इमोशन§ आवेग §पेशन§ अनुभूति §फीलिंग§ और ऐन्द्रियता §सेन्सुअसनेस§ के महत्व को सभी ने स्वीकार किया है, इन तत्वों की उपस्थिति ही बिम्बों को जीवन्त और प्राणवान बनाती है, बिम्ब केवल यथार्थ की प्रतिच्छवि विशेष नहीं होते, बल्कि वे दर्पण की भाँति होते हैं, जिसमें चेहरे की रूप-रेखाओं से परे किसी सम्बंधित सत्य का उद्घाटन होता है । §2§

लीविस ने बिम्ब की ऐन्द्रियता पर बल दिया है, प्रत्येक बिम्ब में भावात्मक या बौद्धिक - ऐन्द्रियता होती है । §3§

लेविस के मत में किसी कवि की आधुनिकता के पहचान के तीन साधन है, शैली, बिम्ब और विषय वस्तु । §4§

नयी कविता में जो बिम्ब प्राप्त होते है वे अपने पूर्ववती काव्य बिम्बों की अपेक्षा भिन्न किस्म के हैं । ऐकओर तो वस्तु वर्गीय और मानस वर्गीय बिम्बों का प्रयोग हुआ है, तो दूसरी ओर संवेद्य, संश्लिस्ट और यौन

---

§1§ दे प्रोब्लम आफ स्टाइल, जे मिडल्टनमरी, आक्सफोर्ड युनिवर्सिटी प्रेस - लन्दन 1949 §प्रथम संस्करण§ केदारनाथ सिंह, तीसरा सप्तक - पृ. 197.

§2§ द लैंग्वेज पोयट्स यूज विनिफ्रेड नो वोटटनी - लंदन 1962 - सी. डी. लेविस द पोयटिक इमेज - पृ. 18.

§3§ द आर्ट पोयट्री - पाल वैलेरी, अनु. डेनिस फोलियट - लन्दन - 1958.

§4§ सी. डी. लेविस, द पोयटिक इमेज - पृ. 19.

बिम्बों का प्रयोग हुआ है । अनेक प्रकार के बिम्ब जीवन के विविध पक्षों से चुनकर लिये गये है, मुक्तिबोध और अज्ञेय की अधिकांश कविताओं में विराट बिम्ब और स्मृति बिम्बों की योजना हुई है, नई कविता में प्रयुक्त इन नूतन बिम्बों पर अंग्रेजी के बिम्बवादी कवियों जैसे इलियट, एजरा पाउन्ड, लारेन्स, डायलन, टामस, तथा ह्यूम आदि कविओं का प्रभाव है, प्रभाव ग्रहण करना और प्रभाव डालना यह एक मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है, प्रभाव ग्रहण और अनुकरण करना ये दो भिन्न मानसिक स्थितियाँ हैं । आज जब कि दुनिया इतनी सिमट गई है, तब पारस्परिक प्रभाव ग्रहण एक स्वाभाविक प्रक्रिया बन गई है, लेकिन कोई भी साहित्य का उन प्रभावों को किस ढंग से प्रस्तुत करता है, इसी में उसकी कुशलता और मौलिकता है ।

अतः यह नहीं कहा जा सकता कि पश्चिमी काव्य साहित्य का ही प्रभाव है, और उनके द्वारा प्रयुक्त बिम्बों का ही अनुकरण हुआ है । बदलते हुए युग, बदलती हुई काव्य संवेदना और मापदण्ड के साथ बिम्बों के भी नये-नये आयाम विकसित हुए है, आजके नये कवियों के अधिकांश बिम्ब, अपने गाँव-गंवई के अकृत्रिम जीवन प्रणाली के अनेक सन्दर्भों से जुटाए गये हैं । एजरा पाउन्ड ने जिस सघन बिम्ब प्रधान, चित्रमय और ठोस कविता का आदर्श निरूपित किया था, उसका गहरा प्रभाव शमशेर की एक कविता "अमन का राग" कविता में देखा जा सकता है :-

"मुझे अमरीका का लिबर्टी स्टैचू उतना ही प्यारा है
जितना मास्को का लाल तारा
और मेरे दिल में पेकिंग का स्वर्गीय महल
मक्का-मदीना से कम पवित्र नहीं । ॥1॥

बिम्बों की दृष्टि से कुछ और कविताएँ टूटी हुई बिखरी हुई, "ये लहरें घेर लेती हैं", "सींग और नाखून", "शिला का खून पीती थी", आदि कविताएं उल्लेखनीय हैं । नई कविता के कवियों ने गलियों, तिकोनों, चौराहों, सड़कों, मकानों, सीढ़ियों के बिम्ब खींचे है । और कहीं पर युगीन औद्योगिक सभ्यता के विभिन्न पक्षों एवं सन्दर्भों को स्थापित करने के लिए दैनन्दिन जीवन के चिर-परिचित उपकरणों की सहायता तथा विभिन्न क्षेत्रों से बिम्बों का चयन किया गया है, आधुनिक नगर सभ्यता की निस्सारता और यान्त्रिकता में घुट रहे मनुष्य की उद्देश्य-हीनता

॥1॥ "अमन का राग" शमशेर बहादुर सिंह पृ. 20.

स्थापित करने के लिए, इन कवियों ने सड़कों के बिम्ब निर्मित किए हैं । कहीं-कहीं पगडन्डियों के बिम्ब बड़े ही सजीव, सुन्दर और आकर्षक लगते हैं । §1§

"राजपथ । बेहोस ऐंड़ी देह से नंगे पड़े हैं ।" §2§

"रात्रि की काली स्याह कड़ाही से अकस्मात ।
सड़को पर फैल गई ।
सत्यों की मिठाई की चाशनी" §3§

"रास्ते पर चलता हूँ कि पैरों के नीचे से ।
खिसकता है रास्ता - यह कौन कह सकता है ।
चलता हूँ देखता हूँ नगर का मुस्कराता
व्यक्तित्व महाकार ।
दमकती रौनक का उल्लास ।
चह चहाती सड़कों की साड़ियां" §4§

"सड़कें विधवा-सी नजर आयीं ।
गुप्तचर चेहरे, हजारों की खाली निगाहों से ।
झाँक कर लौट गये ।" §5§

मानव शरीर के विभिन्न अंगों के बिम्ब "धर्मवीर भारती" कुंवर नारायण, और मुक्तिबोध की कविताओं में स्पष्ट रूप से दृष्टि-गोचर होते हैं । नयी कविता में सीढ़ियों के बिम्ब यत्र-तत्र बिखरे पड़े हैं ।

"जड़वत पत्थर सी वे बैठी हैं ।
सीढ़ी पर, किसी वीरान टावर की ।
अंधेरी भीतरी गोलइयों के बीच
चक्कर दार जीना एक चढ़ता हूँ, उतरता हूँ । §6§

"सीढ़ियां थीं बादलों की झूलती
टहनियों सी ।
शिला का खून पीती थीं । §7§

---

§1§ अरीओ करूणा प्रभामय - डॉ॰ अज्ञेय पृ॰ 65
नकेन के प्रपद्य नलिन विलोचन शर्मा, मोतीलाल बनारसी दास - पटना-1956 प्रथम संस्करण

§2§ "संशय की एकरात" नरेश मेहता - पृ॰ 86
नकेल §2§ पारिजात प्रकाशन - पटना 1981 प्रथम संस्करण

§3§ चाँद का मुख टेंडा है - मुक्तिबोध-पृ॰ 37 §नया हिन्दी काव्य, डॉ॰ शिवकुमार मिश्र, अनुसंधान प्रकाशन-कानपुर - 1962 प्रथम संस्करण

§4§ अन्धायुग - डॉ॰ धर्मवीर भारती - पृ॰ 23 §नया हिन्दी काव्य और विवेचना डॉ॰ शंभूनाथ चतुर्वेदी, नंदकिशोर अेन्ड सन्स वाराणसी- 1964 प्रथम संस्करण§

§5§ आत्मजयी - पृ॰ 25 §नये प्रतिमान, पुराने निष्कर्ष, लक्ष्मीकान्त वर्मा, भारतीय ज्ञानपीठ 1966 प्रथम संस्करण§

§6§ कुछ कविताएं - शमशेर बहादुर सिंह - पृ॰ 12 §नयी समीक्षा नये संदर्भ, डॉ॰ नगेन्द्र नेशनल पब्लिकेशन हाउस-दिल्ली प्र॰ सं॰ §7§ कुछ और कविताएं, शमशेर बहादर प॰ 52 §नयी कविता स्वरूप और समस्याएं-जगदीश गप्त, भारतीय ज्ञानपीठ

कविता में संगीत और संगीत में काव्य का साधर्म्य प्रायः स्वीकृत है इलियट ने इसी लिए "द म्युजिक आफ पोयट्री" पर महत्त्व दिया था । नयी कविता में संगीत के बिम्ब ढालने में शमशेर का महत्त्वपूर्ण स्थान है ।" §1§

मेरी बांसुरी है एक नाव की पतवार
जिसके स्वर गीले हो गये हैं ।
छप्-छप्-छप् मेरा हृदय कर रहा है.....
छप्-छप्-छप्.........। §2§

गंध के बिम्ब अज्ञेय, मुक्ति बोध, शमशेर, कुंवर नारायण, नरेश मेहता की कविताओं में अधिकतर पाये जाते हैं ।

तुम्हारी देह,
मुझको कनक-चम्पे की कली है
दूर ही से,
स्मरण में भी गंध देती है । §3§

ये रजकण अब भी मरे नहीं,
इनमें, जो उठने की मनोक्षमता गहरी
इस मिट्टी में, अब भी जीवन की गंध भरी । §4§

नरेश मेहता की कविता में नायिका खस की तरह खुशबू फैलाना गंध बिम्ब और भी रंगीन बना देता है, इसके अतिरिक्त रघुवीर सहाय और अजीत कुमार की कविताओं में सुन्दर गंध बिम्बों का चयन हुआ है ।

---

§1§ बावरा अहेरी - डॉ. अज्ञेय - पृ. 35
"नयी कविता सीमाएं और संभावनाएं, गिरिजा कुमार माथुर, अक्षर प्रकाशन, दिल्ली - 1966 प्रथम संस्करण"

§2§ कुछ और कविताएं - शमशेर - पृ. 6
§"नयी कविता" कान्ति कुमार, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ एकादमी, भोपाल 1972 प्रथम संस्करण§

§3§ चाँद का मुंह टेढ़ा है - मुक्ति बोध - पृ. 196
§"नयी कविता के प्रेरणा एवं प्रयोजन डॉ. विजय द्विवेदी, प्रगति प्रकाशन, आगरा - 1978 - प्रथम संस्करण§

§4§ आत्महत्या के विरूद्ध - रघुवीर सहाय, पृ. 47
§नयी कविता के बाद, ओमप्रकाश अवस्थी, पुस्तक संस्थान, नेहरू नगर, कानपुर - 1974 प्रथम संस्करण§

UNIVERSITY LIBRARY

"भीड़ में मैलखोरी गन्ध मिली ।
भीड़ में अदिम मूर्खता की गन्ध मिली
भीड़ में मुझे नहीं मिली मेरी गन्ध
जब मैंने सांस भर उसे सूंघा" §1§

नई कविता में आस्वाद बिम्ब भी यत्र-तत्र मिल जाते हैं । जगदीश गुप्त और विजय देव नारायण साही ने इन बिम्बों के प्रयोग किये हैं ।

कच्चे आमों की फांकी सी
आँखें तुम्हारी
ओंठों को अजब खट्टा मीठा स्वाद दे गयी
यह धूप बहकी-बहकी
कि शराब आसमानी । §2§

स्पर्श बिम्बों के प्रयोग में गिरिजा कुमार माथुर, धर्मवीर भारती, पद्मधर त्रिपाठी कायल हैं ।

खुली ओस में दुन्धिया सेज-सी
पानी सी ठन्डी है ऋतु मनभावनी । §3§

अफ मेरी बाहों में शव जैसा ठन्डा । कौन गिरा । §4§

शिखरों पर पिछली, सुबह की । कुहरिल धूप । कुने-कुने स्पर्श का ।
यह अगम विस्तार । §5§

श्रवण बिम्बों का प्रयोग अज्ञेय, नरेश मेहता, और मुक्ति बोध की कविताओं में विशेष रूप से मिलता है । "मेरे घोड़ें की टाप,चौखटा चढ़ती जाती है"§6§

---

§1§ तीसरा सप्तक - विजय देव नारायण साही, पृ. 288
§निराला, रामविलास शर्मा, जन प्रकाशन गृह - बम्बई, 1948 प्रथम संस्करण§
§2§ ठन्डा लोहा धर्मवीर भारती - पृ. 67
§पल्लव सुमित्रा नन्दन पन्त, राधकमल प्रकाशन-दिल्ली - 1973 प्रथम संस्करण§
§3§ नयी कविता पद्मधर त्रिपाठी अंक-7 - पृ. 109,110
§परिमल निराला, गंगा ग्रंथागार लखनऊ सं. 2000 - प्रथम संस्करण§
§4§ अरीओ करूणा प्रभामय - डॉ.अज्ञेय - पृ. 64
पक गयी है धूप, रामदरश मिश्र, ज्ञानपीठ प्रकाशन,वाराणसी - 1966 पृ.सं.
§5§ बोलने दो चीड़ को, "नरेश मेहता, पृ. 64
§6§ चाँद का मुख टेढ़ा है । मुक्ति बोध - पृ. 29।

ये सातों पोशाक पहन कर..... .पुच्छलतारे ।
बिजली बूंदनियों की तड़-तड़ । तक तड़ाक की आतिशबाजी । §1§

भागता मैं दम छोड । घूम गया कई मोड़ । भागती है
चप्पल, चट-पट आवाज । चांटो सी पड़ती । §2§

जहाँ लोग लिखते थे, कविताएँ
वहाँ खड़े हो गये कारखाने । §3§

नई कविता में भावों एवं विचारों के बिम्ब भारती अज्ञेय एवं सर्वेश्वर की कविताओं में भरे पडे है । स्मृत्ति के कब्जे पर कसे मन की विविध स्थितियों और दशाओं का मान कराता हुआ यह बिम्ब इसी श्रेणी में आता है ।

रात भर । हवा चलती रही ।
मन मेरा......। स्मृत्ति के कब्जे पर फसे हुए,
खिड़की के पल्ले सा । खुलता, बन्द होता रहा....
छड़ और दिवार के बीच सर पटकता रोता रहा । §4§

नई कविता पर वैज्ञानिक और यांत्रिक युग का पूर्ण प्रभाव पड़ा है । यांत्रिक और वैज्ञानिक बिम्बों का प्रयोग अज्ञेय, धर्मवीर भारती, मदन वात्स्यायन, सर्वेश्वर, लक्ष्मीकान्त वर्मा, नलिन, त्रिलोचन, दुष्यन्त कुमार, भारत भूषण, व प्रयाग नारायण, त्रिपाठी, विष्णु विराट चतुर्वेदी आदि ने मोटर, रेलगाड़ी, टैलीविजन, एटम बम्ब और रेफ्रिजरेटर आदि को कविता में लाकर बिम्ब निर्माण किया है ।

पहाडियों से घिरी हुई छोटी-सी घाटी में
ये मुंह झींसी चिमनियां बराबर ।
धुआं उगलती जाती हैं । §5§

थर्मामीटर के पारे सी । चुपचाप भावनाएँ चढ़ती उतरती हैं । §6§

मैं स्याह चन्द्र का फ्यूज बल्ब । §7§

---

§1§ काठ की घांटियां सर्वेश्वर दयाल सक्सेना - पृ. 277
§2§ चीजों को देखकर विश्वनाथ प्रसाद तिवारी - पृ. 87
§3§ -वही- - पृ. 87
§4§ अरीओ करूणा - प्रभामय - डॉ. अज्ञेय - पृ. 85
§5§ चाँद का मुख टेढ़ा है - मुक्ति बोध पृ. 22
§6§ तीसरा सप्तक - मदन वात्स्यायन - पृ. 134
§7§ युग चेतना, जून-57 वीरेन्द्र कुमार जैन - पृ. 27

इंजन के हेड़ लाइट सा शोर-गुल के बीच ।
सूरज निकल गया । गार्ड की रोशनी-सा ।
पीछे-पीछे, गुम सुम अब शुकतारा जा रहा है । (1)

मैं जिसे मिटाने को सहसा
चल पड़ा दूर पर रहा पास
तुम बिन्दु और तुम केन्द्र रही
यह प्यार हमारा बना न्यास
मैं वृत्त-वृत्त बन नाच रहा
तुम बिन्दु-बिन्दु बन रही पास । (2)

उम्र की कितनी ही खन्दकों को लांघती ।
अंधियारी चट्टानी टनलों में । जिन्दगी की,
रेलगाडी । प्यास की सीटियां मारती, अनचाहें मनमारे
गुजरती ही चली गई ।(3)

डॉ0 शिव कुमार मिश्र के अनुसार, नयी कविता में बिम्बवाद, फ्रायड की मनोविश्लेषण सम्बन्धी उत्पत्तियां, यौन बिम्ब, क्लासिकल, स्पर्श प्राप्त बिम्ब जिनमें अतीत का गाढ़ा रंग विद्यमान है, मात्र दृश्य ही नहीं इन्द्रिय संवेदना को छूने वाले सूक्ष्म से सूक्ष्म स्तरों को छूने वाले स्पर्श ध्वनि तथा गन्ध चित्रों की स्थिति विशेषण विशेष्य तथा वातावरण को सजीव करने वाले तथा व्यथित मानव की छटपटाहट को सजीव ढंग से व्यक्त करने वाले बिम्ब प्राप्त होते है ।(4)

नई कविता में अज्ञेय, भारती, गिरिजा कुमार माथुर, शमशेर, कुंवर नारायण और इन्दु जैन की कविताओं में खुले आम यौन-बिम्बों के प्रयोग हुए है ।

"और वह दृढ़ पैर मेरा है । गुरू रक्षणु-सा जड़ा हुआ ।
तेरी प्राण पीठिका पर । लिंग-सा खड़ा हुआ । (5)

थक जायें तेरे कुच । मे से सीने पर धक्-धक करके ।
फड़के । फिर रह जाये गुम्फित जंधाएं । (6)

---

(1) नरेश, नकेन के प्रपन्च - पृ. 72
(2) वही - पृ. 72
(3) तीसरा सप्तक, प्रयाग नारायण त्रिपाठी - पृ. 55
(4) सीढ़ियों पर धूप - रघुवीर सहाय - पृ. 170
(5) हरी घास पर क्षण भर - डॉ. अज्ञेय - पृ. 48
(6) इत्यलम् - डॉ. अज्ञेय - पृ. 64

सन् 1960 के बाद उभरे हुए बिम्ब असम्बद्ध एवं खन्डित तिरते हुए नजर आये । लक्ष्मीकान्त वर्मा ने इस मोह की ओर संकेत करते हुए लिखा है, "भाषा और बिम्बों की यह निरर्थकता ही हमें अब नंगे शब्दों की ओर ले जा रही है । ताजी कविता जिस भाषा की खोज में है वह नंगी भाषा है" । आवरणहीन, सज्जा हीन, संस्कार हीन, और इन सबसे अधिक ऐसा नंगापन जिसमें अभिजात्य जंगलीपन के ऊपर एक समय बोध की छाप लगा सकें । (1)

साठोत्तरी कवियों में श्रीकान्त वर्मा की एक रचना देखिए :

"कई औरतों को खुश,
करने की कोशिश में
कई शक्ल बदल रहा
सोफे पर बैठा -
नामर्द
(क्षमा करें महिलायें)
मैं अपने कमरे में खड़ा हूँ नग्न । (2)

सन् 60 के बाद की कविता के अधिकांश बिम्ब भाव बिम्ब है, जो युवा पीढ़ी के मोह भंग के बाद के आक्रोश, घृणा, भय, विवशता, असुरक्षा, ऊब, आदि के मनोभावों को मूर्त करते हैं । "अन्धायुग" की ये पंक्तियाँ देखिए :-

(क) उध्र्व संगमरमर पर लगे हुए छत्ते-सी
यह सारी दुनियाँ
जिसे हम न पा सके,
हमारी डंक - छिदी देह को नहीं पाता
वहाँ कहीं शहर भी होता है । (3)

(ख) कटे हुए पैरो में, अपनी यात्रा लपेट कर
हम रेगिस्तानों में फैले पड़े हैं ।
वर्जित हों यों तो अपनी सुविधा के लिए
रेतीली छाती से पहिया निकाल दो (जी जायेंगे) (4)

---

(1) क ख ग - 9, पृ. 57 (केदारनाथ सिंह, आधुनिक हिन्दी कविता में बिम्ब विधान - पृ. 315 - 321.
(2) साठोत्तरी हिन्दी कविता (शोध और सन्दर्भ) डॉ. क्षेमचन्द्र सुमन, पृ. 14 आर्य प्रकाशन मंडल, गांधीनगर, दिल्ली ।
(3) "अन्धायुग" धर्मवीर भारती - पृ. 60
(4) "संक्रान्त" कैलाश वाजपेयी - पृ. 1

विशेष रूप से इन कविताओं में राजनीति, शासन और सेक्स सम्बन्धी बिम्ब अधिक उभरे हैं, सेक्स सम्बन्धी कवितायें राजनीति की तुलना में अधिक बिम्बात्मक है । धर्मवीर भारती का बिम्ब विधान पौराणिक अधिक है, संज्ञा शब्दों से निर्मित बिम्बों में कवि ने कनपटियां, झाड़ी फोड़े, ज्योतिर्वाण, अन्धड़, पगध्वनि, इत्यादि संज्ञाओं को गृहण किया है । "अन्धायुग" में कल्पना से सहारा लेकर सुन्दर बिम्बों का चयन किया है ।

बिजली, सा झपट खींचकर शय्या के नीचे
घुटनों से दाब लिया उसको
पंजों से गला दबोच लिया
आँखों के कोटर के दोनों साबित गोले
कच्चे आमों की गुठली जैसे उछल पड़े । §1§

नयी कविता बिम्ब केन्द्रित रही है, और अक्सर कवियों में बिम्ब का ऐसा घटाटोप तैयार हुआ, कि सातवें दशक तक आते-आते कई कवियों को यह महसूस हुआ कि कविता को बिम्ब से मुक्त कराके ही उसे जीवन्त और प्रासंगिक रखा जा सकता है। §2§

बिम्ब का विरोध हिन्दी में ही नहीं, अपितु पश्चिमी यूरोप में भी होने लगा । §3§

फलतः साठोत्तर कविता में वह प्रवृत्ति सामने आयी है, जिसे "सपाट बयानी" कहा गया है । §4§

अधिकांश साठोत्तर कविता वक्तव्यों के रूप में लिखी गई है, धूमिल की निम्नलिखित पंक्तियाँ एक दृष्टान्त हैं, वे किसी बिम्ब का निमार्ण नहीं करती, किन्तु वे कविता है । एक उद्धरण दृष्टव्य है :-

एक सम्पूर्ण स्त्री होने के पहले ही
गर्भाधान की क्रिया से गुजरते हुए
उसने जाना कि प्यार
घनी आबादी वाली बस्तियों में
मकान की तलाश है । §5§

---

§1§ चाँद का मुख टेढ़ा है - मुक्ति बोध - पृ. 11
§2§ कविता के नये प्रतिमान - डॉ. नामवरसिंह - पृ. 134
§3§ वही - पृ. 135,36
§4§ वही - पृ. 134
§5§ "संसद से सड़क तक" - धूमिल - पृ. 9

"परास्त बुद्धिजीवी का वक्तव्य" शीर्षक काव्य में समसामयिक भारतीय सन्दर्भ में बुद्धिजीवियों की पराजय प्रभावहीनता और विवशता के व्यंजक अनेक बिम्ब अंकित किये गये हैं । वैसे इस प्रकार के बिम्ब को खंडित और विकीर्ण बिम्ब हैं । मुक्त आसंग की पद्धति के साथ-साथ विरूपीकरण, फैंटसी, विरोध आदि की बिम्ब रचना की पद्धतियाँ साठोत्तरी कविताओं में अत्याधिक जनप्रिय हुई हैं ।

विषय-वस्तु की दृष्टि से साठोत्तरी कविता के बिम्बों के दो ही मुख्य विषय हैं । एक राजनीति और शासन तथा दूसरा सेन्स, सेक्स सम्बन्धी कवितायें राजनीति की कविताओं की तुलना में अधिक बिम्बात्मक है, इस लिए साठोत्तरी कविता में जितने यौन बिम्ब हमें मिलते हैं,(उतना अधिक हिन्दी कविता में बहुत कम पाये जाते है, ऐसे यौन बिम्बों में मांसलता और आघात पहुँचाने की प्रवृत्तियाँ अधिक पायी जाती है । इनमें उग्रता, उदन्डता, अशिष्टता भी व्यापक रूप में मिलता है । जगदीश चतुर्वेदी की यह पंक्तियाँ देखिए :-

एक नन्दी डकारा है, पूरे वेग से और भाग गया है जंगल की ओर,
शिवलिंगों की पूजा करते-करते गृहणियां नग्न हो गई है,
और अपने शरीर को चक्रवात-सा घूमने दे रही हैं,
कठोर शिला के शीर्ष से सटकर । §1§

प्रगतिवादी कविता में बिम्ब की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण वे चित्र है, जिनका सम्बन्ध लोक जीवन एवं यथार्थ प्रकृति से है, यह प्रगतिवादी बिम्बों का दूसरा प्रकार है, प्रगतिवादी कवियों ने यथार्थवादी चित्रों की अधिकांश रचनायें की है । प्रगतिवादी कविता में वस्तु बिम्बों की संख्या सबसे अधिक है, कुछ रचनायें ऐसी है, जिनमें शहर और गाँव दोनों के चित्र हैं । शिव मंगल सिंह "सुमन" की यह पंक्तियाँ श्रमिक महिला का चित्र प्रस्तुत करती है :-

आ रही वह खोल झोंटा
एक पुटली एक लोटा
थूक सुरती पोंछ डाला
शीघ्र अपना होंठ मोटा
एक क्षण पिचके कपोलों में गई कुछ दौड़ लाली
चल रही उसकी कुदाली । §2§

---

§1§ इतिहास हन्ता - जगदीश चतुर्वेदी - पृ. 17
§2§ प्रलय-सृजन - शिव मंगल सिंह "सुमन" - पृ. 12.

प्रगतिवादी कवि प्रकृति, मनुष्य और मानवी प्राणियों की एकता के मार्मिक चित्र भी उपस्थित करता है । "नागार्जुन" की "अकाल और उसके बाद" कविता इसका एक सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है । प्रगतिवादी कवि प्रकृति के रूप में मानव के जीवन पर अधिक बल देता है, वह यथार्थ को अधिक महत्त्व देता है । वह मनुष्य और प्रकृति की स्थिति का विषम या विरोधाभासी बिम्ब में देखता है । कैसे प्रगतिवादी कविता में ऐसे भाव बिम्बों की कमी है । रामविलास शर्मा की इन पंक्तियों को देखिए :-

"सोना ही सोना छाया आकाश में,
पश्चिम में सोने का सूरज डूबता,
पका रंग कंचन जैसे ताया हुआ,
भरे ज्वार के भुट्टे पक कर झुक गये,
"गला-गला" कर हांक रही गुफ्ना लिये,
दाने चुगती हुई गलरियों को खड़ी,
सोने से भी निखरा जिसका रंग है,
भरी जवानी जिसकी पक कर झुक गई । §1§

प्रगतिवादी कवि कभी-कभी बहुत कम शब्दों में बड़े मार्मिक और भाव बिम्ब उपस्थित करते है । "नागार्जुन" की निम्नांकित पंक्तियाँ स्मृन्ति मूलक सांस्कृतिक बिम्ब में विवशता और ललक के भाव बिम्ब परिलक्षित होते है ।

घोर निर्जन में परिस्थिति ने दिया है डाल,
याद आता है, तुम्हारा सिन्दूर - तिलकित भाल । §2§

नई कविता में ही नयी वैज्ञानिक प्रगति एवं यांत्रिकता को बिम्बों में बांधने के अथक प्रयत्न किये गये है, "अज्ञेय" ने हवाईयान की ऊँची उड़ान से आधुनिक नगर का बड़ा ही सुन्दर चित्र अंकित किया है । जिसमें उन्होंने परमाणु युग की कल्पना की है ।

उतरो थोड़ा और
धनी कुछ हो जाने दो
रासायनिक धुंध के इस चीकट कम्बल की नयी घुटन को,
मानव का समूह-जीवन इसी झिल्ली में पनप रहा है । §3§

---

§1§ रूप तरंग - रामविलास शर्मा - पृ. 7
§2§ तालाब की मछलियाँ - नागार्जुन - पृ. 14
§3§ इन्द्रधनु रौंदे हुए ये - डॉ. अज्ञेय - पृ. 61

इसी तरह "रघुवीर सहाय" ने भी निम्नांकित पंक्तियों को बिम्ब के रूप में नयी यांत्रिक सभ्यता को उद्धृत किया है ।

सिनेमा की रीलों-सा कस के लिपटा है, सभी कुछ मेरे अन्दर,
कमानी खुलने को भरती है, हुमास । §1§

अजित कुमार की कविता "कवियों का विद्रोह" तथा "अज्ञेय" की कविता "कलगी बाजरे की" इस नवीनता के आग्रह के दस्तावेज है । इनके द्वारा प्रयोगवाद और नयी कविता में, बिम्ब का क्षेत्र विस्तृत हुआ । इसके साथ ही नये कवियों में अन्य इंद्रिय बोधों के बिम्ब भी अस्तित्व में आये और इनका काव्य में जमकर प्रयोग हुआ । एक उदाहरण देखिए :-

§1§ ये तुम्हारे नाम की दो बत्तियाँ हैं
धूप की ।
डोरियां दो गंध की । §2§

§2§ ध्वनि बिम्ब :-

अस्पताल में
दवा की शीशियों की आती हुई ट्रेकी
प्रतिक्षण क्षीण होते हुए भी
एक गति में बँधी खनखनाहट-सी
जिसकी आवाज दूर तक सुनाई देती है । §3§

§3§ स्पर्श बिम्ब :-

उफ मेरी बाहों में शव जैसा ठन्डा
कौन गिरा ? §4§

§4§ स्वाद बिम्ब :-

जुड़े हुए होठों के बीच
हमारी जी में
जिन्दा मछलियों की तरह
आपस में टकराती रही ।
यों । जैसे हम दोनों ने । एक दूसरे के भीतर का ।
पूरा जलाशय §आशय-जल§ पी लिया हो । §5§

---

§1§ दूसरा सप्तक - पृ. 165
§2§ इन्द्र धनु रौंदे हुए ये - अज्ञेय - पृ. 74
§3§ नयी कविता अंक-1 - सर्वेश्वर दयाल सक्सेना - पृ. 61-62
§4§ ठन्डा लोहा तथा अन्य कविताएं - धर्मवीर भारती - पृ. 67
§5§ युग्म - जगदीश गुप्त - पृ. 34

बिम्बों की सामाग्री के स्थान पर कुछ ऐसे बिम्ब हैं, जो नयी कविता में पहलीबार प्रयोग हुए, इस प्रकार के बिम्बों में भाषा वैज्ञानिकों का व्यक्तित्व उल्लेखनीय है, इन बिम्बों के प्रेरक कारणों में नये अनुसन्धान, परोक्ष वस्तुवाद, अस्तित्ववाद की दार्शनिक स्थापनाएँ और सबसे अधिक नवीनता की विशेषता प्रतिबिम्बत होती है, ऐसे बिम्बों का निर्माण प्राय: विशेषणों की सहायता से किया गया है ।

क्रिया और गूंगे विशेषण के बीच में
खड़ी है एक पूरी नामहीन
पीढ़ी । §1§

केदार नाथ सिंह ने लिखा है, कि प्राचीन काव्य में जो स्थान "चरित्र" का था, आज की कविता में वही स्थान बिम्ब अथवा "इमेज" का है । §2§

नये कवियों ने बिम्ब पर इतना बल दिया है कि भविष्य में रचनात्मक सामर्थ्य और उसकी उपयोगिता पर संदेह होने लगा । "अशोक वाजपेयी" का कहना है कि नयी कविता में बिम्बों और प्रतीकों की ऐसी भरमार हो गई थी, कि कविता शब्दाडंबर होने लगी थी, और उसकी अनुभावस्मक तात्कालीकता नष्ट हो गई थी । §3§

डॉ० नामवर सिंह इस पर बल देते हुए कहते है, कि छठें दशक के प्रारम्भ में उत्पन्न विषय सामाजिक स्थितियों को चुनौती के सामने बिम्ब-विधा कविता में अप्रासंगिक सिद्ध होने लगा था । §4§

गोबिन्द द्विवेदी ने बिम्ब को काव्य-वस्तु से जोड़ते हुए तथा इसे कविता का एक स्वाभाविक गुण मानते हुए लिखते हैं, कि :- "बिम्ब किसी भी आत्मीय अनुभूति के सन्दर्भ में वह ऐन्द्रिय रचना पद्धति है, जिसके पीछे कवि के अन्त:करण का दीर्घकालीन आत्मसंघर्ष तथा शक्तिशाली वासना की सत्ता मौजूद रहती है । और वह कविता के अन्त गलैन अर्थ का स्वायन्त रूप में अविभाज्य गतिशील बनाए रखता है । §5§

---

§1§ कृति अप्रैल - 1960 - पृ. 12
§2§ तीसरा सप्तक - सं. अज्ञेय - पृ. 116
§3§ फिलहाल - पृ. 13
§4§ कविता के नये प्रतिमान - काव्य-बिम्ब और सपाटबयानी - पृ. 113
§5§ नयी कविता में बिम्ब का वस्तुगत परिप्रेक्ष्य - पृ. 75

बिम्ब हमेशा कविता का एक अनिवार्य अंग रहा है, साठोत्तरी कवियों और समीक्षकों ने भी कविता में विचार तत्त्व बल देने के बावजूद बिम्ब को एकदम अस्वीकार नहीं किया है, किन्तु "राजीव सक्सेना का विचार है, कि कविता की प्रासंगिकता तथा संवेदन, एकांकीपन, इतिवृत्तात्मकता और हासोन्मुख विचारों से मुक्त करने तथा उसके जटिल सन्दर्भों को समझने के साथ-साथ एक उपर्युक्त बिम्ब-प्रतीक चुनने की आवश्यकता पर बल दिया है । वैसे साठोत्तरी काल की कविता में बिम्ब को बड़े सहज ढंग से स्वीकार किया गया है ।

साठोत्तरी कविता में बिम्ब को मुख्य रूप से दो नाम दिया गया है,

(1) मानव जीवन सन्दर्भों से संयुक्त बिम्ब

(2) मानवेतर बिम्ब या प्राकृतिक बिम्ब

राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक सन्दर्भों से गुजर कर नयी स्थितियों की चुनौती स्वीकार करने तथा आज की मानव-नियति से सीधा साक्षात्कार करने के उद्देश्य से कवि जिन काव्य बिम्बों की रचना करता है, वे मानव जीवन के बिम्ब कहे जाते हैं । और मानवेतर बिम्बों के अन्तर्गत प्रायः प्रकृति से लिये गये उन बिम्बों की गणना होती है, जिनका मानव जीवन की मुश्किलों खुशियों आदि से कोई घनिष्ठ सम्बन्ध नहीं होता । (1)

साठोत्तरी कविता ने राजनीतिक सच्चाई को अधिकतर सामने लाने का प्रयास किया है, इस सन्दर्भ में "धूमिल" ने "संसद से सड़क तक" नामक कविता में जनतंत्र की चर्चा की है । एक उद्धरण देखें :-

सिरे कटे मुर्गे की तरह फड़कते हुए जनतंत्र में
सुबह
सिर्फ, चमकते हुए रंगों की चालबाजी है
संसद से सड़क तक, जनतंत्र के सूर्योदय मे । (2)

इस प्रकार कैलाश वाजपेयी ने भी ऐसे सन्दर्भों को उठाया है । एक उदाहरण देखें :-

मैं देखता हूँ
कुछ लकडबग्धे संसद से निकल कर
पहुँच गए हैं घर रखैल के
देहान्त से हटकर प्रतीयों के जंगल में । (3)

---

(1) साठोत्तरी हिन्दी कविता शिल्प के नये आयाम - डॉ. बदामसिंह रावत-पृ. 76
(2) संसद से सड़क तक - धूमिल - पृ. 15
(3) देहान्त से हटकर - कैलाश वाजपेयी - पृ. 20

इसी सन्दर्भ को उठाते हुए बिम्बों को केन्द्र में रखकर अनेक कवियों ने राजनीतिक यथार्थ को उद्घाटित किया है, प्रस्तुत पंक्तियाँ "रमेश गौड़" की हैं, जिन्होंने राजनीतिक यथार्थ को उजागर किया है, एक उद्धरण दृष्टव्य है :-

"भेड़ों का जुलूस पूरे जोर से गाता है
राष्ट्रीय गान सदन में
विभीषणों का राजतिलक हो रहा है । और
सदन के बाड़े में आवारा सांड चबा रहे हैं
देश का नक्शा और संविधान और राष्ट्रध्वज" । ‖1‖

आज की राजनीतिक स्थिति से युवा वर्ग काफी नाराज है, क्योंकि वर्तमान समय में पढ़-लिख लेने के बाद भी उन्हें बेकार बनकर तथा बोझ बनकर घूम रहे है, और हमारी व्यवस्था इस चीज से अपरचित नहीं है, इस व्यवस्था के प्रति सारा दोष राजनीतिक नेताओं के पक्ष में जाता है, इसे पौराणिक सन्दर्भों के माध्यम से आज का कवि चित्रित करता है । एक उदाहरण देखें :-

सुबह की खुशनुमा द्रोपदी को
समय का दुःशासन नंगा कर रहा है,
सांफ की सलौनी सीता को
खुदगर्ज रावण उठा ले गया है
सुबह होने से पहले, प्रसव की स्थिति और मेरा देश । ‖2‖

वर्तमान समय में सामाजिक आर्थिक स्थिति की तरफ नजर डाला जाय तो, सब से पहले भारत ही नहीं, बल्कि पूरे विश्व की स्थिति खराब है, आदमी की जगह मशीन ले चुकी है, समाज में हो रहे आर्थिक शोषण और आम आदमी का जीवन बड़ी कठिनाई से बीत रहा है, बहुत से ऐसे भी बिम्ब हैं, जो आर्थिक सामाजिक शोषण को रेखांकित करते है, धूमिल जैसे कवियो में इस प्रकार के बिम्ब हमें देखनें को मिलते है ।

साठोत्तरी कविता का व्यक्ति बड़ा असहाय, पीड़ित और व्याकुल है । उसकी इस स्थिति का वर्णन बिम्ब ही प्रस्तुत करते है, वे वर्तमान मानव के जीवन से लिये गये है, समाज की शक्ति और उसकी सीमा को धूमिल ने किस तरह व्यक्त किया है, निम्नांकित पंक्तियाँ द्रष्टव्य है ।

‖1‖ निषेध - कहीं कुछ नहीं होता - पृ. 186.
‖2‖ "सव्यंसाची - पृ. 41

मगर मैं जानता हूँ कि मेरे देश का समाजवाद
मालगोदाम में लटकती हुई
उन बाल्टियों की तरह है जिस पर आगे लिखा है
और उनमें बालू और पानी भरा है । §1§

डॉ० चन्द्रकान्त वांदिवडेकर की मान्यता है, वास्तविकता की पहचान में धूमिल ने प्रचुर ताजे नये मौलिक बिम्ब दिये हैं, केवल बिम्ब की समृद्धि को प्रतिमान माना जाय तो धूमिल को श्रेष्ठ कवि माना जा सकता है । §2§

धूमिल ने देश में व्यापक बेईमानी, खून-खराबा, स्वार्थपरता को बहुत नजदीक से देखा है, और उसे उन्होंने छोटे-छोटे बिम्बों में व्यक्त किया है, एक उदाहरण देखिए :-

मैनें अहिंसा को
एक सत्तारूढ़ शब्द का गला काटते हुए देखा
मैनें ईमानदारी को अपनी चोर जेबें
भरते हुए देखा
मैनें विवेक को
चापलूसी के तलवे चाटते हुए देखा । §3§

साठोत्तरी कविता में प्राकृतिक बिम्बों की बहुत कमी है, कहीं-कहीं कुछ कवि प्रकृति की मुग्धता तथा उसकी उदासीनता को बड़े ही सहज ढंग से बिम्बों के माध्यम से मानव के दैनिक जीवन की घटनाओं को प्राकृतिक परिवेश के साथ जोड़ा है । आसमान में चमकती हुई बिजली और बादलों की गर्जना को कवि ने बिम्ब का एक अनूठा उदाहरण प्रस्तुत किया है :-

नभ में निर्वसना बिजलियों का
उद्वेग पूर्ण नृत्य देखकर
बादल, सिनेमा हाल में बैठे
आवारा छोकरों की तरह
रह-रह कर आवाजें कस उठते हैं । §4§

---

§1§ संसद से सड़क तक - पटकथा - धूमिल - पृ. 139
§2§ धर्मयुग - 25 जनवरी 1976 - पृ. 21
§3§ "संसद से सड़क तक" - पटकथा - धूमिल - पृ. 131
§4§ कविताएं - 1964 - आधीरात - डॉ. पुरूषोत्तम खरे - पृ. 78.

प्रतीक :-

प्रतीक बिम्ब की तरह केवल भारत में ही नहीं, बल्कि पश्चिमी देशों के साहित्य में भी विपुल रूप से प्रयुक्त हुआ है । वैसे यह मूल रूप से पश्चिमी देशों की देन माना जाता है । "अमेरिका में एमर्सन, थोरो, हर्मन, मैलबिले, एंडगर, एलेन, पो, इत्यादि फ्रान्स में बोदलेयर, मलार्मे, वैलेरी, रिम्बों, वर्लेन इत्यादि इंग्लैन्ड में टी.ई.हुल्मे, एजरा पाउन्ड, टी.एस.इलियट, डब्ल्यु,बी.येट्स आदि के चिन्तन और काव्य-सृजन ने प्रतीकवाद को जन्म दिया । {1}

"प्रतीक का शाब्दिक-अर्थ-चिन्ह प्रतिरूप, प्रतिमा अथवा स्थानापन्न माना जाता है, व्यापक रूप में "प्रतीक" किसी वस्तु का ऐसा दृश्य प्रतिनिधि है, जो उस वस्तु के साथ अप्रमेय साम्य के कारण निर्मित है, जिसको हम दिखा नहीं सकते वरन् उस वस्तु के साथ "साहचर्य" के कारण केवल अनुभव कर सकते है ।" {2}

प्रतीकों का प्रसार, भाषा, साहित्य, कला, धर्म, दर्शन, और विज्ञान से लेकर नित्य प्रति में व्यवहार में देखा जा सकता है । भाषा वैज्ञानिकों का विचार है, कि अपने प्रारम्भिक रूप में मनुष्य ने अपने विविध भावों को व्यक्त करने के लिए जिन शब्दों का प्रयोग किया है, वह उस भाव के ज्ञापक प्रतीक थे, जो किसी वस्तु के रूप, आकार, और गुण के आधार पर बनाये गये थे । विशेष रूप "चित्रलिपि" के विकास के मूल में यही बात सिद्ध होती है । भाषा के विभिन्न शब्द भावों के वाहक "प्रतीक" होते है । मनोविज्ञान के मनोविश्लेषण शाखा के विचारक "फ्रायड" मनोविश्लेषण के आधार पर इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि प्रतीक अवचेतन मन की दमित भावनाओं की अभिव्यक्ति है । {3}

प्रतीक कुछ उपमामूलक अलंकारों- उपमा, रूपक, रूपकातिशयोक्ति-अन्योक्ति आदि- तथा बिम्ब के इतना विकट है, कि कभी-कभी उन्हें एक ही मान लिया जाता है, किन्तु वे वस्तुतः एक हैं नहीं । "प्रतीक" का आधार सादृश्य या साधर्म्य नहीं बल्कि भावना जागृत करने की निहित शक्ति है । अलंकार में उपमान का आधार सादृश्य या साधर्म्य ही माना जाता है । अतः सब उपमान प्रतीक नहीं होते, पर जो प्रतीक होते हैं, वे काव्य की बहुत अच्छी सिद्धि करते है । {4}

{1} आधुनिक हिन्दी कविता का अभिव्यंजना शिल्प - डॉ. हरदयाल - पृ. 202
{2} इन साइक्लोपीडिया ब्रिटानिका, संस्करण 14, खन्ड-21, पृ. 700-701
{3} आधुनिक हिन्दी काव्य और पुराण कथा - डॉ. मालती सिंह - पृ. 257
{4} चिन्तामणि - भाग-2 = आचार्य रामचन्द्र शुक्ल - पृ. 110

उपमा मूलक अलंकारों के निश्चित या रूढ़ विधान में प्रस्तुत या वर्ण्य वस्तु का महत्त्व अक्षुण्ण रहता है, जब कि प्रतीक में वह बिलकुल नगण्य हो जाता है । उसमें अप्रस्तुत या प्रतीयमान अर्थ ही मुख्य बन जाता है । (1)

प्रतीक जिस वस्तु का प्रतिस्थापक या संकेतक है, वह उसकी ओर सचेत साधर्म्य या सादृश्य के द्वारा इंगित नहीं करता है । बल्कि उसकी ओर सम्बन्ध, साहचर्य, रूढ़ि या संयोग के द्वारा संकेत करता है । (2)

बिम्ब अनिवार्यतः ऐन्द्रिय एवं मूर्त होता है, प्रतीक के लिए यह आवश्यक नहीं है । बिम्ब अभिधात्मक भी हो सकता है, कि कुछ प्रतीक ऐसे हों, जिनमें बिम्ब की विशेषताएँ विद्यमान हों, उन्हें हम बिम्बात्मक प्रतीक कह सकते है । (3)

मनुष्य के आन्तरिक और बाह्य जीवन के जो अनेक रहस्य हैं वे प्रतीकों के द्वारा ही अभिव्यक्त होकर गोचर बन जाते हैं, साहित्य में रचनाकार अपने विशिष्ट सूक्ष्म और कभी-कभी जटिल अनुभवों को प्रायः अभिव्यक्त करता है । इसलिए जब वह अभिव्यंजना के नवीन साधनों की खोज में निकलता है, तब वह नये-नये प्रतीकों की योजना करता है । कभी-कभी यह नयी प्रतीक-योजना निरर्थक लग सकती है । (4)

प्रतीकों की दृष्टि से आधुनिक हिन्दी कविता का प्रथम चरण निराशाजनक है । भारतेन्दु युग की अधिकांश कविता परम्परा मुक्त है । और उस काल की कविता का जो अंश परम्परा मुक्त है, वह भी अधिकतर अभिव्यंजना-कौशल में अभिधात्मक और सपाट है, भारतेन्दु युग के कवि भी भक्तिकालीन एवं रीतिकालीन कवियों की भाँति भक्ति-भावना एवं श्रृंगार-भावना की कविताएँ लिख रहे थे, इसकाल के कवियों की कविताओं में थोड़े बहुत प्रतीक मिलते हैं । ये प्रतीक परम्परागत रूढ़ प्रतीक है ।

ऐसे प्रतीकों के अतिरिक्त ईश्वर प्रतीक के रूप में सैंया, यार, आदि का प्रयोग हुआ । (5)

अज्ञान और दुःख के प्रतीक के रूप में अन्धकार । (6)

---

(1) छायावाद का सौन्दर्यशास्त्रीय अध्ययन-कुमार विमल- पृ. 234
(2) वै स्टर । द लिट्रेरी सिम्बल - विलियम टिन्डल - पृ. 6
(3) आधुनिक हिन्दी कविता का अभिव्यंजना शिल्प - डॉ. हरदयाल - पृ. 204
(4) इनसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका, भाग-21 (1964) - पृ. 702
(5) आधुनिक हिन्दी कविता में प्रतीक विधान - नित्यानंद शर्मा - पृ. 148,159
(6) भारतेन्दु ग्रन्थावली - भाग-2 - पृ. 78, 707

ज्ञान और ब्रह्म के प्रतीक के रूप में ज्योति । §1§

विषय वासना के प्रतीक के रूप में विष-फल । §2§

आनन्द के प्रतीक के रूप में त्योहार । §3§

संसार की क्षण भंगुरता के प्रतीक के रूप में "चार दिन का बसेरा" । §4§

प्रेम की अनन्यता के प्रतीक के रूप में पपीहा-धन । §5§

इसी प्रकार श्रृंगारिक कविताओं के प्रतीक रूढ़ प्रतीक हैं, जो शताब्दियों से प्रचलित हैं ।

प्रेमी के लिए भ्रमर । §6§

नायिका के माधुर्य के लिए पीयूष । §7§

प्रिय की कठोरता के लिए पत्थर । §8§

भारतेन्दु युग के कवियों ने अरबी - फारसी कविता के कुछ रूढ़ एवं लोकप्रिय प्रतीकों को भी ज्यों का त्यों अपना लिया है । जैसे :- बहार, गुल, बुलबुल, बुत, चमन, शराब, कबाब, जामे जहर, आबे हयात, का प्याला आदि प्रतीक उन्हीं अर्थों की व्यंजना करते हैं, जिनकी वे अरबी - फारसी काव्य में करते रहे हैं §9§

परम्परागत प्रतीकों में इस युग के कवियों में सबसे अधिक लोकप्रिय "प्रतीक" नदी और नाव है । इनका प्रयोग भारतेन्दु, ठाकुर, जगमोहन सिंह, बदरी नारायण चौधरी, "प्रेमधन" आदि अनेक कवियों ने किया है । §10§

---

§1§ भारतेन्दु ग्रन्थावली-भाग-2 - पृ. 8।
§2§ वही -पृ. 14।
§3§ वही - पृ. 298
§4§ वही - पृ. 299
§5§ प्रेमधन सर्वस्व, भाग-1 - पृ. 20।
§6§ भारतेन्दु ग्रन्थावली, भाग-2 - पृ. 19।
§7§ भारतेन्दु ग्रन्थावली, भाग-2 - पृ. 163
§8§ मन की लहर - प्रताप नारायण मिश्र - पृ. 15
§9§ आधुनिक हिन्दी कविता में प्रतीक विधान - नित्यानन्द शर्मा - पृ. 156, 159, 160.
§10§ -वही- - पृ. 152, 163, 165.

नायिका के कुचों के लिए चोर का भारतेन्दु द्वारा किया गया प्रतीकात्मक प्रयोग, मौलिक प्रयोग के उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है । भक्ति-श्रृंगार की अपेक्षा राष्ट्रीय भावना, और सामाजिक आलोचना वाली कविताओं में प्रतीक पाये जाते है । यद्यपि इस क्षेत्र में भी रूढ़ि प्रतीकों का बाहुल्य है । जैसे :- वीर पुरूष के लिए सिंह, कायरों के लिए सियार, खान खर, शशक, आदि रूढ़ि जाति ही है । इस क्षेत्र में भारतेन्दु ने मौलिक प्रतीकों का प्रयोग किया है । जिसमें भारत में मची है, होरी । होली का प्रतीक अत्यन्त मार्मिक है । यह होली देश के सर्वनाश का प्रतीक है । भारत में होली खेलने वाले अंग्रेज है । इस लिए इस युग का कवि इन्हें "राक्षस" कहता है । §1§

इसी आवेश में भारतेन्दु ने झाँसी, उज्जैन, अवध, कन्नौज आदि ऐतिहासिक स्थानों का नाम लेते है । तो वे प्राचीन वैभव और उन्नति एवं उसके नष्ट हो जाने के सहज प्रतीक बन जाते है । ये ऐतिहासिक प्रतीक तत्कालीन सन्दर्भ में विशेष भावपूर्ण बन गये हैं । भारतेन्दु युग में प्रतीकों की दृष्टि से सब से महत्त्वपूर्ण काव्य भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का ही है । उनके काव्य में प्रतीकों की संख्या अधिक है । बल्कि नये प्रतीकों का विधान भी उन्होंने ने ही सबसे अधिक किया है ।

द्विवेदी युगीन कविता की ओर जब दृष्टिपात करें तो इस युग में प्रतीकों का प्रयोग बहुत कम हुआ है । इस युग में कविता के स्वभाव में न तो अध्यात्मिकता की प्रधानता है, और न ही श्रृंगारिकता की । किन्तु छायावाद की ओर उन्मुख होती चेतना पर आध्यात्मिकता की कुछ छाया पड़ती है । इस युग में "मैथिलीशरण गुप्त जी ने "झंकार" नामक कविता में कुछ रूढ़ि और कुछ नवीन प्रतीकों के प्रयोग देखने को मिलते हैं ।

निम्नलिखित प्रथम दो उदाहरणों में शरीर के लिए "पिंजड़ा" का संसार के लिए "हाट" का प्रतीकात्मक प्रयोग किया है । किन्तु यह प्रयोग बहुत पुराना है । "द्वार" का प्रतीकात्मक प्रयोग नवीन है ।

§1§ मुझको क्रीड़ा से तुमने इस पिंजड़े में है, बन्द किया । §2§

§2§ देना पड़ा वही जो लाया, हां, मैं हाट देख आया । §3§

§3§ तेरे घर के द्वार बहुत हैं, किसमें होकर आऊँ मैं । §4§

---

§1§ मन की लहर - प्रताप नारायण मिश्र - पृ. 33
§2§ झंकार - मैथिली शरण गुप्त - पृ. 60
§3§ -वही- - पृ. 89
§4§ -वही- - पृ. 53

यदि इस युग के कवि की दृष्टि एक ओर पौराणिक प्रतीक "कल्पवृक्ष" की ओर गई है तो दूसरी ओर उतनी ही मात्रा में उसने "आम" और "बबूल" का भी प्रतीकात्मक प्रयोग किया है । आवृत्ति की दृष्टि से "बबूल" को द्विवेदी युग का एक प्रिय प्रतीक कहा जा सकता है । इसे हम मौलिक प्रतीक भी कह सकते हैं । "बबूल" का दुःखद वस्तु नीच एवं हानिकारक व्यक्ति, अपकार आदि विभिन्न अर्थों की व्यंजना करने वाले प्रतीक के रूप में प्रयोग किया है ।

§1§ कल्पवृक्ष में क्यों बबूल का भ्रम तेरे मन आया?। §1§

§2§ कोमल कल्पवृक्ष को मानौ कटंक वृक्ष बबूल,
प्रेम फूल के रस पराग को गिनौ द्वेष विष मूल,
मित्र यह बड़ी तुम्हारी भूल । §2§

§3§ लगाते रहे सदैव रसाल, कभी भी बोयें नहीं बबूल । §3§

§4§ दिया निकाल देश - सीमा से बाहर बड़े जतन से ।
उस बबूल तरू को उखाड़ कर फेंका नन्दन बन से । §4§

मिलियम मार्सल अर्बन ने लिखा है, कि धार्मिक प्रतीकों अथवा प्रतिमाओं के माध्यम से ऐसे तथ्यों की अभिव्यक्ति होती है, जो अधिक सार्वभौम और आदर्श सम्बन्धों पर आधारित हो, विस्तार से बचने और आदर्शवाद के दृष्टिकोण की वजह से इन तथ्यों की अभिव्यक्ति सीधे नहीं की जाती, प्रतीकों में की जाती है । ऐसे प्रतीकों को तीन वर्गों में बाँटा जा सकता है ।

§1§ देववस्तु के प्रतीक
§2§ पवित्र कार्यों के प्रतीक
§3§ ऐतिहासिक घटनाक्रम के देव व्यापारों के प्रतीक.

इनमें से कुछ प्रतीक मिथकीय अवधारणा के स्तर तक विकसित हो जाते है । और मिथकीय अवधारणा का भी बार-बार नवमिथकीयकरण होता जाता है । हर काल की भौतिक परिस्थितियों के अनुरूप नये-नये देव व्यापार या कार्य जुटते है, जो प्रतीकात्मक स्तर पर अंततः मानव जीवन के विकास की ही अंतर्कथा कहते है । मनुष्य ने जीवन के नये अर्थों की तलाश किस रूप में की, इस ओर संकेत देते है । §5§

---

§1§ रामचरित चिन्तामणि - रामचरित उपाध्याय - पृ. 42.
§2§ भारत गीत - श्रीधर पाठक - पृ. 53.
§3§ मर्म स्पर्श - हरि औध - पृ. 88
§4§ पथिक - रामनरेश त्रिपाठी - पृ. 65.
§5§ मिथक और आधुनिक कविता - डॉ. शम्भूनाथ चतुर्वेदी - पृ. 29.

राष्ट्रीय भावना से प्रेरित ऐतिहासिक - पौराणिक प्रतीकों का सूत्रपात्र भारतेन्दु युग में ही हो चुका था, द्विवेदी युग में उनका विस्तार हुआ । "नास्तिक" व्यक्ति के लिए "चा चार्वाक ।" (1)

"सुखदायक" उपकरण के लिए "कल्पवृक्ष" । (2)

"दुष्ट सौतेली "माँ" के लिए कैकेयी । (3)

"देशद्रोही के लिए "जय चन्द" का प्रयोग प्रतीकात्मक ही है । (4)

इस काल में इस वर्ग के प्रतीकों के लिए सामाग्री "महाभारत" और "भागवत" से अधिक मिली । दुःशासन, कंस, कृष्ण, देवकी, द्रौपदी, अर्जुन, प्रहलाद, वसुदेव, अक्रूर, जरासन्ध, आदि पात्र,महाभारत कंस का कारागार आदि स्थान, महाभारत के युद्ध में कृष्ण की अस्त्र न ग्रहण करने की प्रतिज्ञा आदि घटनायें इस काल की कविता में विभिन्न राष्ट्रीय भावनाओं का प्रतीक बन गई है । (5)

शहीदों के प्रतीक के रूप में ईसा, सुकरात, मंसूर जैसे व्यक्तियों का भी उपयोग किया गया है, ऐतिहासिक पौराणिक प्रतीकों की संख्या इस काल में कम है । और जितने प्रतीक प्रयोग में आये हैं, वे पौराणिकता या ऐतिहासिकता से केवल एक कदम पीछे हटकर प्रतीकात्मकता की पहेली सीढ़ी तक पहुँचे है । उनकी ऐतिहासिकता और पौराणिकता, प्रतीकात्मकता के साथ अटूट रही है । इस युग में ऐतिहासिक पौराणिक कथात्मकता को छोड़कर भाषा में मिश्रित हो चुके हैं । इस युग का कवि इतिहास पुराण कथाओं का अधिकतर वर्णन करता है, क्योंकि यह बात "गुप्तजी" के "जय द्रथ वध" और धर्मवीर भारती का "अन्धा युग" इस बात के प्रमाण है । (6)

इस युग के कवि ने जिन ऐतिहासिक - पौराणिक प्रतीकों का उपयोग किया है, उनमें नवीनता और मौलिकता का अंश काफी है । प्रवृत्ति की दृष्टि से इस प्रकार के प्रतीकों का सूत्रपात्र भारतेन्दु युग में देखने को मिलता है, किन्तु उनकी सही तस्वीर द्विवेदी युग में स्पष्ट होती है । मौलिकता और नवीनता

---

(1) हिन्दू - मैथिली शरण गुप्त - पृ. 103.
(2) रामचरित - चिन्तामणि - रामचरित उपाध्याय - पृ. 42.
(3) यशोधरा - मैथिली शरण गुप्त - पृ. 38.
(4) पद्यप्रसून - हरि औध - पृ. 39.
(5) हिन्दी कविता में युगान्तर - प्रो. सुधीन्द्र - पृ. 211, 266, 67.
(6) हिन्दी कविता में युगान्तर - प्रो. सुधीन्द्र - पृ. 211.

की दृष्टि से इस युग के कवियों में प्रमुख स्थान मैथिली शरण गुप्त, हरि औध, राय देवी प्रसाद ॄपूर्ण" एवं राम नरेश त्रिपाठी का है । गुप्त जी ने अनेक नये प्रतीकों की उद्‌भावना की है । "उषा का आलोक" प्रकृति क्षेत्र से लिया गया ऐसा प्रतीक है, जो छायावाद में बहुत प्रयुक्त हुआ है । "गुप्तजी" के इस प्रतीक में छायावादी प्रतीक की भाँति अर्थ के कई स्तर हैं ।

"कुछ न हुआ, आते ही आते उषा का आलोक,
अन्धकार छा गया गेह में, दीख पड़ा बस शोक" । ॄ1ॄ

राष्ट्रीयता की अभिव्यक्ति के लिए अधिकांशतः परम्परागत द्रढ़ प्रतीकों का प्रयोग हुआ है, इन रूढ़ प्रतीकों में सिंह, गीदड़, कुत्ता, जैसे सार्व भौम प्रतीकों के उदाहरण इस युग के कवियों ने लिये हैं ।

ॄ1ॄ सिंहों, सत्याग्रह प्रवाह में गोल बांध बहना होगा । ॄ2ॄ

ॄ2ॄ उस छत्रपति शिवराज का है नाम लेना ही अलम् ।
है सिंह - परिचय के लिए, सिंह कह देना अलम् । ॄ3ॄ

ॄ3ॄ हंस जिसे समझा था, तुमने, वह बगला निकलेगा,
कल जो मृग था, वही सिंह हो तुम्हे फाड़ डालेगा । ॄ4ॄ

ॄ4ॄ है गीदड़ों को इसमें न ठौर । ॄ5ॄ

ॄ5ॄ कुत्तो, मुझको चीड़फाड़ डालो तुम चाहे,
किन्तु तुम्हारे निंध नृपति को कौन सराहे । ॄ6ॄ

उपरोक्त उदाहरणों में "सिंह" वीरता का एवं भयानक शत्रु का, "गीदड़" कायर व्यक्ति का, "कुत्ता" शासक के टुकड़ों पर पलने वाले नीच चाकरों का प्रतीक है । इनका प्रतीकार्थ रूढ़ है, किन्तु उसका सन्दर्भ नया है । उपयुक्त उदाहरणों में "मृग" "हंस" और "बगुला" का भी प्रतीक रूप में प्रयोग हुआ है । द्विवेदी युगीन कविता में ये भी लोकप्रिय प्रतीक हैं । ॄ7ॄ

ॄ1ॄ किसान - मैथिली शरण गुप्त - पृ. 28.
ॄ2ॄ शंकर सर्वस्व - पं. हरिशंकर शर्मा - पृ. 248.
ॄ3ॄ भारत-भारती - मैथिली शरण गुप्त - पृ. 86.
ॄ4ॄ रामचरित - चिन्तामणि - रामचरित उपाध्याय - पृ. 41.
ॄ5ॄ पत्रावली - मैथिली शरण गुप्त - पृ. 23.
ॄ6ॄ अनघ - मैथिली शरण गुप्त - पृ. 123.
ॄ7ॄ आधुनिक हिन्दी कविता में प्रतीक विधान - नित्यानन्द शर्मा - पृ. 183.

छायावादी प्रतीकों का दूसरा मुख्य स्रोत संस्कृति है । "सांस्कृतिक" प्रतीकों के अन्तर्गत पुराण, इतिहास, धर्म, दर्शन कला-कौशल आदि क्षेत्रों से लिये गये प्रतीक लिये जा सकते हैं । पौराणिक और धार्मिक प्रतीक प्रायः प्रत्येक छायावादी कवि में प्रचुरता के साथ सुलभ हैं । कुछ उदाहरण देखें :-

1. किन्तु क्या अन्ध भी तुम हो गए ?
   राक्षस वह, रखते हो नीति का भरोसा तुम । §1§

इस उदाहरण में "राक्षस" का प्रतीकवत् प्रयोग करके निराला ने "औरंग जेब" के चरित्र की राक्षसी प्रवृत्तियों की ओर संकेत किया है ।

2. आ रहा याद वह वेदों का उद्धार, ख्यात
   वह श्रुति धरता, ज्ञान की शिख वह अनिर्वात
   निष्कम्प, भाष्य प्रस्थानत्रयी पर, संस्थापन
   भारत के चारों ओर मठों का.......... । §2§

इस उद्धरण में प्राचीन भारत की कुछ गौरवपूर्ण घटनाओं के द्वारा इस देश की महान उपलब्धियों की तरफ संकेत किया गया है ।

3. अहे वासुकि सहस्त्र फन ।
   लक्ष अलक्षित चरण तुम्हारे चिन्ह निरन्तर
   छोड़ रहे हैं, जग के विक्षत वक्षस्थल पर । §3§

इस उद्धरण में "वासुकि" का रूपकात्मक प्रतीक परिवर्तन की विविध क्रियाओं को व्यंजित करता है ।

पंत जी ने अपनी नव-अध्यात्म काल की कविताओं में पौराणिक पात्रों का नये प्रतीकार्थों में प्रयोग किया है । "स्वर्ण किरण" संग्रह की "अशोकवन" कविता में "सीता" पार्थिव चेतना का, राम ईश्वरत्व का तथा "रावण" जड़ भौतिकता का प्रतीक बन गया है । पन्त की छायावाद काल की कविताओं में धार्मिक - पौराणिक प्रतीक विरल हैं ।

"महादेवी वर्मा में पौराणिक-धार्मिक प्रतीक नगण्य है । §4§

---

§1§ अपरा - निराला - पृ. 84.
§2§ अपरा - निराला - पृ. 181-82.
§3§ पल्लव - सुमित्रानन्दन पन्त - पृ. 150.
§4§ महादेवी वर्मा की रचना प्रक्रिया - कृष्णदत्त पालीवाल - पृ. 130.

पौराणिक-धार्मिक प्रतीकों की सब से अधिक संख्या प्रसाद जी के काव्य में मिलती है । पौराणिक कथा और पात्रों का प्रतीकात्मक उपयोग करने की दृष्टि से आधुनिक हिन्दी कविता में "कामायनी" का सर्वश्रेष्ठ स्थान है । प्रसाद जी ने कामायनी की कथा इस प्रकार कही है, कि वह असंदिग्ध रूप से एक रूपक बन गई है । §1§

कामायनी के आमुख में प्रसाद जी ने लिखा है, कि "यह आख्यान इतना प्राचीन है, कि इतिहास में रूपक का भी अद्भुत मिश्रण हो गया है । इस लिए मनु, श्रद्धा और इड़ा इत्यादि अपना ऐतिहासिक अस्तित्व रखते हुए भी सांकेतिक अर्थ की भी अभिव्यक्ति करें तो मुझे कोई आपत्ति नहीं । मनु अर्थात मन के दोनों पक्ष, हृदय और मस्तिष्क का सम्बन्ध क्रमशः श्रद्धा और इड़ा से भी सरलता से लग जाता है ।" §2§

कामायनी में मानव सभ्यता के भौतिक मनो वैज्ञानिक एवं आध्यात्मिक विकास की कथा कहती है, उसमें उसका अतीत भी सुरक्षित है, वह वर्तमान के इतिहास के साथ जुड़ी हुई है, और भविष्य के लिए उसके पास एक नया सन्देश भी है । "कामायनी के सभी पात्र प्रतीक हैं ।" मनु आदिम मनुष्य के भी प्रतीक हैं । और सम्पूर्ण मानवजाति के मन के भी । श्रद्धा आदिम नारी का प्रतीक है । और श्रद्धा नामक मनोभाव या हृदय का भी । इड़ा बुद्धि का जल प्लावन मानव-चेतना के अन्नमय कोष में ही निमग्न होने या डूब जाने का प्रतीक है । त्रिलोक §भाव, कर्म, एवं ज्ञान की वृत्तियों का प्रतीक§ मान सरोवर §समरसता का प्रतीक§ कैलाश शिखर §आनन्दमय कोष का प्रतीक§ आदि का प्रतीकात्मक प्रयोग हुआ है । इड़ा का निम्नांकित चित्र उसके बुद्धि का प्रतीक होने को भी संकेतिक करता है । एक उद्धरण दृष्टव्य है ।

बिखरी अलकें ज्यों तर्क-जाल
वह विश्व मुकुट-सा उज्ज्वलतम शशि खन्ड-सदृश था स्पष्ट-भाल
दो पद्म पलाश चषक से दृग देते अनुराग-विराग ढाल ।
त्रिबली थी त्रिगुण तरंगमयी, आलोक वसन लिपटा अराल
चरणों में थी गति भरी ताल । §3§

---

§1§ कामायनी के अध्ययन की समस्यायें - डॉ. नगेन्द्र - पृ. 50.
§2§ कामायनी - जयशंकर प्रसाद - पृ. 9-10.
§3§ कामायनी - जयशंकर प्रसाद - पृ. 168.

कविता के क्षेत्र में पौराणिक – धार्मिक प्रतीकों में सांकेतिकता अधिक है, पौराणिकता – धार्मिकता कम । द्विवेदी युग में पौराणिक – धार्मिक प्रतीकों की अपेक्षा वे अधिक अभिव्यंजक एवं भाषा के सहज अंग बन गयें हैं ।

छायावादी कविता में ऐतिहासिक प्रतीक बहुत कम हैं । "राम की शक्ति पूजा" में हनुमान और दुर्गा का जिस प्रकार प्रयोग किया गया है, उसे उनका फ्तान्त्रीय प्रतीक के रूप में किया गया उपयोग माना जा सकता है । §1§

"कामायनी" में नटराज, त्रिपुर, शक्ति-तरंग, त्रिकोण, श्रृंग, डमरू, महाकाल, अनाहत, निनाद, कैलाश, इत्यादि का सम्बन्ध शैव दर्शन एवं साधना पद्धति से है । §2§

छायावादी कविता पर वेदान्त बौद्धों के करूणावाद शैवों के आनन्द वाद, अरविन्द के नव वेदान्त आदि के दार्शनिक चिन्तन का प्रभाव पड़ा है । इसलिए छायावादी कविता में दर्शन के क्षेत्र से गृहीत अनेक प्रतीक मिलते हैं । पन्त जी के नवचेतना वादी काव्य में अरबिन्द दर्शन से गृहीत प्रतीकों का ढेर लगा हुआ है, यद्यपि उन प्रतीकों से उनके काव्य की श्रीवृद्धि नहीं हुई है । "स्वर्ण किरण" "स्वर्ण-धूलि" से लेकर "आस्था" §1973§ तक स्वर्ण किरण, स्वर्ण धूलि स्वर्णिम क्षण, ज्योति वृष्टि, अमृत स्नान, स्वर्ण चेतना, रजतातप, स्वर्गिक शिखर, अर्ध्वग श्रृंग, दिव्योत्पल, रजत जल, इत्यादि की इतनी अधिक पुनरावृत्ति हुई है । §3§

छायावादी कविता के अनेक प्रतीक चित्र, संगीत, और मूर्ति आदि ललित कलाओं से लिए गए हैं । चित्रकला से लिए गए प्रतीकों में रंग, रेखा,चित्र, चितेरा, तूलिका, छाया प्रकाश, आदि, संगीत कला से वीणा, झंकार, तार, विहाग, प्रभाती, भीड़, मूर्छना वंशी आदि तथा मूर्तिकला से मूर्ति, मूर्तिकार पाषाण आदि उल्लेखनीय है । §4§

---

§1§ छायावाद का सौन्दर्य शास्त्रीय अध्ययन – कुमार विमल – पृ. 243 – पाद टिप्पणी–1.

§2§ कामायनी – जयशंकर प्रसाद – पृ. 272 – 273.

§3§ आधुनिक हिन्दी कविता का अभिव्यंजना शिल्प – डॉ. हरदयाल – पृ. 219.

§4§ आधुनिक हिन्दी काव्य में अप्रस्तुत विधान – नरेन्द्र मोहन – पृ. 170–71.

हिन्दी कविता में ये प्रतीक एक नये क्षेत्र का समावेश करते हैं । इन प्रतीकों का विभिन्न छायावादी कवियों ने इतना अधिक प्रयोग किया है कि वे छायावाद के रूढ़ प्रतीकों में बड़ी जल्दी बदल गये हैं । ललित कलाओं से गृहीत प्रतीकों का सर्वाधिक उपयोग निराला एवं महादेवी वर्मा ने किया है । कुछ उदाहरणं देखें :-

1. वीणा वह स्वयं सुवादित स्वर,
   फूटी तर अमृक्षार - निर्झर,
   यह विश्व-हंस है चरण सुधर जिस पर श्री । §1§

2. वीणे, पंचम स्वर में बजकर मधुर मधु
   बरसा दे स्वयं विश्व में आज तो...... । §2§

3. बिखरे हैं तार आज, मेरी वीणा के मतवाले । §3§

संगीत कला के क्षेत्र से लिया गया प्रतीक "वीणा" विविध अर्थों की व्यंजना करता है । पहले उदाहरण में वह रत्नावली का दूसरे और तीसरे उदाहरण में हृदय का प्रतीक है ।

छायावादी कवि अपने प्रतीकों के माध्यम से अधिकांशतः अपनी लौकिक-अलौकिक रति भावना को तथा उससे सम्बद्ध विभिन्न अनुसंगिक भावनाओं को अभिव्यक्त करता है । ऐसे प्रतीक स्वच्छन्द मनोवृत्ति के द्योतक है । "कामायनी" में बसन्त के प्रतीक के द्वारा व्यक्त यौवन का चित्रण स्वच्छन्द प्रतीकों का एक सुन्दर उदाहरण है ।

मधुमय बसन्त जीवन वन के, वह अन्तरिक्ष की लहरों में,
कब आये थे तुम चुपके से रजनी के पिछले पहरो में ।
क्या तुम्हे देखकर आते यों,मतवाली कोयल बोली थी,
उस नीरवता में अलसाई कलियों ने आँखें खोली थी । §4§

रूपक से शुरू होकर बसन्त §यौवन§ अपने अंग-प्रत्यंगों विविध प्रभावों आदि को व्यक्त करने के लिए लम्बी प्रतीक श्रृंखला में बदल जाता है । "अन्तरिक्ष" हृदय की "लहरें" भावनाओं का "रजनी" के पिछले पहर किशोरावस्था का "मतवाली कोयल,

---

§1§ तुलसीदास - निराला - पृ. 54.
§2§ झरना - जय शंकर प्रसाद - पृ. 36.
§3§ यामा §निहार§ - महादेवी वर्मा - पृ. 4.
§4§ "कामायनी" - जय शंकर प्रसाद - पृ. 63.

मन की कलियाँ प्रेम की विभिन्न प्रवृत्तियों का प्रतीक बन जाती है । ये स्वच्छन्द प्रतीक थोड़ी स्थूलता प्राप्त करके "काम प्रतीकों" में बदल जाते है । प्रसाद जी ने निम्नलिखित पंक्तियों में "दो काष्ठों की सन्धि" तथा "अग्नि शिखा" के माध्यम से एक विशेष काम व्यापार को व्यंजित किया है ।

दो काठों की सन्धि बीच उस, निभृत गुफा में अपने,
अग्नि-शिखा बुझ गयी, जागने पर जैसे सुख सपने । ﴾1﴿

निराला की "जूही की कली" में अनेक काम प्रतीक है । डॉ० नगेन्द्र ने "दीप शिखा" की आलोचना करते हुए लिखा है, कि अज्ञात प्रिय के "भाव के मूल में तो स्पष्टतः काम का स्पन्दन है, ही जलने की भावना में असन्तोष और अतृप्ति-भावना भी अनिवार्य है । वास्तव में सभी ललित कलाओं के विशेषतः काव्य के और उससे भी अधिक प्रणय काव्य के मूल में अतृप्त काम की प्रेरणा मानने में आपत्ति के लिए स्थान नहीं है । ﴾2﴿

"रामेश्वर शुक्ल "अंचल" की निम्नलिखित पंक्तियों में अंधियारी और "प्रकाश" क्रमशः दुख और सुख के रूढ़ प्रतीकार्थों में ही प्रयुक्त हुए है ।

सुन ओ जीवन की अंधियारी, ओ प्रकाश के दाता
भूला जाता पंथ मुझे अब अपना भूला जाता । ﴾3﴿

इसी प्रकार बच्चन के प्रसिद्ध गीत "इसीलिए खड़ा रहा कि तुम मुझे पुकार लों में उजाड़, बहार, निदाय, वसन्त, मरूस्थली, मरीचिका, सुधा, अंगार, तुषार क्रमशः दुखद और सुखद के रूढ़ अर्थ में प्रयुक्त हुए हैं । ﴾4﴿

उत्तर छायावादी गीत-काव्य का वैशिष्ट्य उन मदिरालय सम्बन्धी पारसीक प्रतीको में है, जिनका प्रयोग इस काव्य में प्रचुरता के साथ हुआ है और जिन्हे इस काव्य में नये प्रतीकार्थ प्रदान किये गये हैं । ये प्रतीक हैं, मधुशाला, साकी बाला, हाला, प्याला, पीनेवाला, मालिक, या इनके पर्यायवाची । इन प्रतीकों का विरल प्रयोग छायावादी काव्य में भी हुआ है । इन प्रतीकों का अधिक

﴾1﴿ कामायनी - जयशंकर प्रसाद - पृ. 136.
﴾2﴿ विचार और अनुभूति - डॉ० नगेन्द्र - पृ. 116.
﴾3﴿ वाग्देवी - सं. नरेश मेहता - पृ. 267.
﴾4﴿ -वही- - पृ. 362.

प्रयोग बच्चन ने अपनी मधु काव्य में किया है । एक उदाहरण देखिए :-

मधुशाला = विश्व, वीणा, बलिदेवी, प्रणय, विरही ।
साकीवाला = समीर, रागिनी, भारत माता, प्रेयसी, आँखें ।
प्याला = नभ, तारे, वीरों का शीश, अधर पलक ।
हाला = सागर-जल, स्वर लहरी, वीर रक्त, यौवन-रस, आँसू । §1§

उत्तर छायावादी गीत कवि की वैयक्तिकता उसे परम्परागत प्रतीकों को नये अर्थ-सन्दर्भ प्रदान करने के लिए विवश करती हैं, बच्चन की "मधुशाला" के अनेक छन्द इस व्याख्या वाली प्रवृत्ति से ग्रस्त है, एक उदाहरण देखिए :-

"भावुकता-अंगूरलता से खींच कल्पना की हाला,
कवि साकी बन आया है, भरकर कविता का प्याला
कभी न कण भर खाली होगी, लाख पियें, दो लाख पियें ।
पाठकगण हैं पीने वाले, पुस्तक मेरी "मधुशाला । §2§

गीत-कवियों की अपेक्षा राष्ट्रीय धारा के माखनलाल चतुर्वेदी, रामधारी सिंह "दिनकर" बालकृष्ण शर्मा, "नवीन" आदि कवियों की कविता में प्रतीकों की संख्या अधिक है और उनमें स्रोत्रों की दृष्टि से वैविध्य भी है । उनकी अनुभूति और चिन्तन का स्वरूप भी जटिल नहीं है, क्योंकि अन्ततः वे भी द्विवेदी युगीन राष्ट्रीय कविता की अगली विकसित कड़ी है । राष्ट्रीय कविता की परम्परा के अनुसार इन कवियों ने ऐतिहासिक-पौराणिक, प्रतीकों को राष्ट्रीय संदर्भ प्रदान किये हैं । दुःशासन कंस, कृष्ण, यशोदा, वसुदेव, देवकी, सुदामा, अक्रूर, जरासंघ, द्रोपदी, अर्जुन, भीम इत्यादि महाभारत के पात्र, काली-मर्दन, कुंज-विहार, जरासन्ध वध, इत्यादि घटनायें शकटार, नंदवंश आदि ऐतिहासिक सन्दर्भ प्रतीकों के रूप में राष्ट्रीय-सांस्कृतिक काव्य में फिर प्रयुक्त हुए हैं । कुछ उदाहरण देखें :-

1. बागी, दागी कहलाने पर, जरा न मन में मुरझाया,
   अगणित कंसों ने सम्मुख, सहसा श्री कृष्ण पाया । §3§
2. कृष्ण-मंदिर में प्यारे बन्धु, पधारो निर्भयता के साथ
   अभी भी यहाँ बहुत से कंस, मचाते हैं नित अत्याचार । §4§

---

§1§ आधुनिक हिन्दी कविता में अलंकार विधान - जगदीश नारायण त्रिपाठी - पृ. 190.
§2§ "मधुशाला" - हरिवंशराय बच्चन - छन्द संख्या-4.
§3§ हिम-किरीटिनी - माखनलाल चतुर्वेदी - पृ. 78.
§4§ मुकुल - सुभद्रा कुमारी चौहान - पृ. 125.

3. रे, रोक युधिष्ठिर को न यहाँ, जाने दे उनको स्वर्णधीर,
पर फिरा हमें गान्डीव – गदा, लौटा दे अर्जुन – भीम वीर। ﴾1﴿

प्रयुक्त उदाहरणों के प्रतीकों का अर्थ-सन्दर्भ निश्चित और स्पष्ट है । वह एकायामी है । इन प्रतीकों के अर्थ-सन्दर्भ में वैविध्य एवं जटिलता नहीं है । राष्ट्रीय भावना से प्रेरित होकर इन कवियों ने कुछ रूढ़ प्रतीकों को नये अर्थ प्रदान किए हैं । सुख का प्रतीक "फूल" इस काव्य में आत्म-बलिदानी व्यक्ति । ﴾2﴿

शूद्रों के प्रति किए जानेवाले सामाजिक अत्याचार का प्रतीक बन जाता है । ﴾3﴿

माखनलाल चतुर्वेदी की निम्नांकित पंक्तियों में श्वान, ग्रामसिंह ﴾चाटुकार, रोटी के टुकड़ों पर ईमान बेचने वाले, सिंह ﴾बलिदानी वीर पुरूष﴿ और भवानी ﴾प्रलयंकार यौवन﴿ इसी नयी प्रतीक स्थिति को स्पष्ट करते हैं ।

श्वान के सिर हो, चरण तो चाटता है,
भोंक ले, क्या सिंह को वह डांटता है ?
रोटियां खाई कि साहस खा चुका है,
प्राणि हो, पर प्राण से वह जा चुका है ।
तुम न खेलो ग्राम-सिंहों में भवानी ।
विश्व की अभिमान मस्तानी जवानी । ﴾4﴿

इन कवियों ने राष्ट्रीय काव्य में भी जो काव्य रचनायें की, उसमें भी अनेक नये प्रतीकों की स्थापना की है । किन्तु अधिकतर परम्परागत रूढ़ प्रतीक है । जैसे : मधुमास, सागर, धूल, फूल, मदिरा, दीपक, शलभ, रात्रि, कली, भ्रमर, वीणा, झंकार, बंशी, मुरली, मूर्छना, पतवार, कांटा, विष, अमृत, ब्याल, हीरा इत्यादि । ﴾5﴿

हिन्दी की आधुनिक कविता में छायावाद के बाद प्रतीकों को नया रूप-रंग प्रगतिवादी कविता में मिला । मूल स्रोत्र की दृष्टि से प्रगतिवादी काव्य प्रतीक उतने ही वैविध्यपूर्ण हैं, जितने छायावादी काव्य प्रतीक थे । प्रगतिवादी कवियों ने

﴾1﴿ संचयिता – दिनकर – पृ. 7.
﴾2﴿ बाग्देवी – सं. नरेश मेहता – पृ. 437.
﴾3﴿ –वही– – पृ. 440.
﴾4﴿ हिमकिरीटिनी – माखनलाल चतुर्वेदी – पृ. 114.
﴾5﴿ आधुनिक हिन्दी काव्य में प्रतीक विधान – नित्यानन्द शर्मा – पृ. 267–92.

भी प्रकृति, पुराण, इतिहास, धर्म, संस्कृति, विज्ञान, दर्शन, राजनीति, आचार, व्यवहार, आदि अनेक क्षेत्रों से अपने प्रतीक लिये हैं । किन्तु काव्य में इन सब प्रतीकों का उपयोग द्वन्द्वात्मक भौतिकवादी दृष्टि से किया गया है । प्रगतिवादी कविता में सैद्धान्तिक प्रतीकों की प्रधानता है । प्रगतिवादी कविता में अक्सर पुनरावृत्त होने वाले सैद्धान्तिक प्रतीक-हंसिया, हथौड़ा, हल, {श्रम के प्रतीक} किसान-मजदूर नारी {शोषित जन समुदाय के प्रतीक} लाल रंग, लाल सेना, लाल तारा रूस {जनवादी शक्तियों के प्रतीक} डालर {साम्राज्यवाद एवं शोषण का प्रतीक} आदि है । कुछ उदाहरण देखिए :-

1. हंसिया और हथौड़ा, अब तक हुआ नहीं पामाल,
   यह पानी से नहीं खून से ही झन्डा है लाल । {1}

2. लाल फौज के लिए कमर कस, फौज चली इन्सानों की,
   लाल रूस है ढाल साथियों, सब मजदूर किसानों की । {2}

3. मिर्चा, पनेथी और डेली ले नमक की साथ में,
   हल एक कन्धे पर धरे हंसिया लिये निज हाथ में,
   किस ओर जायेगा पथिक, यह तो अभी अज्ञात था । {3}

4. आज अंग्रेजी पियानो, सांस धीमी ले रहा है,
   चोट खाया चरमराया छटपटाता रो रहा है
   और जीने के लिए डालर चिकित्सा कर रहा है । {4}

इन उदाहरणों में रेखांकित शब्द प्रतीक हैं । प्रगतिवादी कवियों ने प्रकृति के प्रचुर प्रतीक लिये हैं, किन्तु वे सब एक सांचे में ढले हुए हैं । रूढ़ियों को तोड़ने, शोषकों को नष्ट करने, क्रान्ति के द्वारा शोषण पर आधारित समाज-व्यवस्था को समाप्त करके उसके स्थान पर शोषण मुक्त वर्ग विहीन समाज की स्थापना करने, शोषितों को जगाने और संघर्ष के लिए प्रेरित करने आदि के अर्थ को व्यंजित करने के लिए प्रगतिवादी कवियों ने प्रकृति के विभिन्न कार्य व्यापारों का उपयोग किया है । जीर्ण, पत्र, मधुवात, मृत विहंग, गंगा, ज्वालामुखी, सूर्योदय, कगार, जल, गिद्ध, मछली, गुलाब, कुकुरमुत्ता, कोहरा, धरती, तूफान, सूखे विखे,

---

{1} प्रलय-सृजन - शिवमंगल सिंह "सुमन" - पृ. 60.
{2} लाल निशान - नरेन्द्र शर्मा - पृ. 12.
{3} जीवन के गान - शिवमंगल सिंह "सुमन - पृ. 27.
{4} केदारनाथ अग्रवाल - हंस - अगस्त-1948

पानी, अंकुर, चट्टान, चींटी पतझर इत्यादि अनेक प्राकृतिक प्रतीकों से प्रगतिवादी कविता सुशोभित है ।

प्रगतिवादी दृष्टि और भावना को अभिव्यक्त करने के लिए प्रगतिवादी कवियों ने इतिहास एवं पुराणों से भी प्रतीकों का चयन किया है, ऐतिहासिक प्रतीक पौराणिक प्रतीकों की तुलना में कम हैं । भारतीय इतिहास से ऐतिहासिक प्रतीक प्रगतिवादी हिन्दी कवियों ने प्रायः नहीं लिये है । जो इस बात का प्रमाण है कि प्रगतिवादी कवियों ने भारतीय इतिहास का प्रगतिवादी दृष्टि से अध्ययन ही नहीं किया है । इसी लिए शोषकों के प्रतीक के रूप में उन्हे नीरो, जार, हिटलर तो मिल जाते है । (1)

किन्तु भारतीय इतिहास में बहुत कम मिलते है । कुछ भारतीय ऐतिहासिक प्रतीक हमें रांगेय राघव के काव्य में अवश्य मिलते है । (2)

प्राचीन इतिहास की अपेक्षा प्रगतिवादी कवि की दृष्टि वर्तमान में बन रहे इतिहास पर अधिक है और यहाँ उसका स्वर व्यंग्यात्मक है । नागार्जुन की निम्नांकित पंक्तियों में जयप्रकाश, डांगे, लोहिया, गोपालन, राजाजी, अटल बिहारी वाजपेयी प्रतीकों में बदल गये हैं ।

गेरूआ पहनते जय प्रकाश, नर्मदा किनारे बस जाते,
डांगे हो जाते राज्यपाल, लोहिया जेलों में बल खाते
गोपालन होते नजरबन्द, राजाजी माथा घुटवाते
जनसंघी अटल बिहारी जी, भिक्षा की झोली फैलाते
चौड़ा होता कुछ भाल और, तुम रह जाते दस साल और । (3)

ऐतिहासिक पात्रों की अपेक्षा पौराणिक पात्रों की प्रतीकात्मकता अधिक सरलता से सिद्ध की जा सकती है । इस लिए शोषितों के रूप में शम्बूक, एकलव्य । (4)

द्रौपदी आदि तथा शोषकों के रूप में द्रोणाचार्य, दुःशासन, हिरण्यकशिपु, अहिरावण, दसकन्धर, सहस्त्रबाहु आदि अनेक पौराणिक पात्र मिल जाते हैं । (5)

---

(1) संचयिता – दिनकर – पृ. 34.
(2) मेधावी – रांगेय राघव – पृ. 204.
(3) रणजीत द्वारा "हिन्दी के प्रगतिशील कवि" में उद्धत – पृ. 121.
(4) पिघलते पत्थर – रांगेय राघव, "आततायी" कविता कर्ण "रश्मिरथी–दिनकर"
(5) मेधावी – रांगेय राघव – पृ. 161–62.

युवा पीढ़ी के प्रगतिवादी कवियो ने "सपाटबयानी" वाली शैली को अपनाया और प्रतीकों का प्रयोग बहुत कम किया, किन्तु उन्होने जिन प्रतीकों का प्रयोग किया, वे अपनी प्रकृति में सूक्ष्म स्तर पर पूर्ववर्ती प्रतीकों से भिन्न है । पौराणिक ऐतिहासिक, राजनैतिक, साहित्यिक आदि क्षेत्रों के व्यक्तियों का प्रतीकवत प्रयोग करने के स्थान पर साधारण व्यक्तियों के नामों को प्रतीक के रूप में प्रयोग में लाया गया है । रघुवीर सहाय ने इस प्रकार के नाम प्रतीकों का विशेष उपयोग किया है । नीचे के उदाहरणों में "रामलाल" और "नरेन" स्वाधीन भारत के किसी भी लाचार एवं कष्ट सहते साधारण नागरिक का प्रतीक है और "मुसद्दी लाल" भ्रष्ट एवं देश को उल्टी दिशा में ले जाने वाले किसी भी मंत्री का प्रतीक है ।

1. गरजा मुस्टन्डा विचारक-समय आ गया है
कि रामलाल कुचला हुआ पांव जो घसीट कर
चलता है, अर्थहीन हो जाए । §1§

2. दोनों बाप मिस्तरी, और बीस बरस का बेटा नरेन,
दोनों पहले से जानते हैं पेंच की मरी हुई चुडियां
नेहरू-युग के औजारों को मुसद्दीलाल की सबसे बड़ी देन । §2§

इस पीढ़ी के प्रगतिशील कवियों ने प्रकृति से भी जो प्रतीक लिये हैं, वे प्रतीकार्थ तो वही देते हैं, जो प्रगतिवादी कविता की एक रूढ़ि है, किन्तु प्रकृति से जिन उपकरणों को चुनते हैं, उनमें ताजगी है । इस बात का प्रमाण हमें देवेन्द्र कुमार की निम्नलिखित पंक्तियों में मिलेगा :-

मैं चाहता हूँ
कि घास और पत्तियां तर्क करें,
हो सकता है इससे कोई सम्वाद की स्थिति पैदा हो,
बनस्पति की दुनियां में,
और फूल डालों का सहारा लेना छोड़ दें ।
जब तक सामने को पहाड न हो,
मानसून के उठनें का कोई मतलब नहीं होता,
बवन्डर
रेगिस्तानों में उठता है, तो हर पांचवें कदम पर
बालू के ढूह बनाता है
जैसे चूहे
कच्चे घरों में मिट्टी के घरौंदे । §3§

---

§1§ आत्महत्या के विरूद्ध - रघुवीर सहाय - पृ. 21.
§2§ -वही- - पृ. 22.
§3§ आलोचना - जुलाई-सितम्बर-73, पृ. 76.

घास, पत्तियां, फूल, डालियां, पहाड़, मानसून, बवन्डर, रेगिस्तान, ढूह, चूहे, कच्चे घर, मिट्टी के घरौंदे प्राकृतिक प्रतीक है ।

प्रयोगवादी एवं नयी कविता के कवियों ने अपने प्रतीक पुराण, इतिहास, धर्म, प्रकृति, राजनीति, विज्ञान आदि क्षेत्रों से ग्रहण किये हैं । इनमें मुख्य क्षेत्र तो पुराण और प्रकृति ही हैं । इन प्रतीकों में नवीनता क्षेत्र की दृष्टि से नहीं है, बल्कि उनके उपयोग की दृष्टि से है । नया कवि पुराने मिथक प्रतीक को पहले आज के लिए यथेष्ट विचार में ढालता है । और उसके बाद उसमें से एक नया प्रतीक प्राप्त करता है । (1)

साठोत्तरी कविता में पहली बार पौराणिक चरित्रों से उनके पौराणिक सन्दर्भों को काटकर उनकी आधुनिक सन्दर्भ के साथ संगति बैठाकर उन्हे भाषा का सहज अंग बना दिया गया है । उदाहरण के लिए "धर्मवीर-भारती की कविता "मैं रथ का टूटा हुआ पहिया हूँ" की निम्नलिखित पंक्तियों में यह संकेत कहीं कहीं है कि यह टूटा हुआ पहिआ साथ महारथियों से घिरे हुए अभिमन्यु का है ।

मैं
रथ का टूटा हुआ पहिया हूँ
लेकिन मुझे फेंको मत ।
क्या जानें कब
इस दुरूह चक्रव्यूह में
अक्षौहिणी - सेनाओं को चुनौती देता हुआ
कोई दुस्साहसी अभिमन्यु आकर घिर जाए । (2)

ऐसी ही स्थिति निम्नलिखित उद्धरणों में अभिमन्यु, एकलव्य, द्रोणाचार्य, मुनियों, राजहंस आदि की है :-

1. इस महा जीवन समर में अन्त तक कटिबद्ध,
   मेरे ही लिए यह व्यूह घेरा,
   मुझे हर आघात सहना,
   गर्भ - निश्चित मैं नया अभिमन्यु, पैतृक युद्ध । (3)

---

(1) भवन्ती - अज्ञेय - पृ. 100.
(2) सात गीत वर्ष - धर्मवीर भारती - पृ. 80
    प्रकाशक : सरस्वती प्रेस, 2/43, अन्सारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-2.
(3) चक्रव्यूह - कुंवर नारायण - पृ. 103.

2. मेरे चेहरे में बागड़ियों के झोपड़ों से झाँकता है, एकलव्य
   द्रोणाचार्य अभिसन्धि करते हैं
   मुनियों की व्याजहीन आँखों में
   पोष्य राजहंस माला नीर - क्षीर - विवेक करती है । ॥1॥

धर्मवीर भारती की कविता के उपर्युक्त उद्धरण में नरेन्द्र मोहन के लिए "टूट हुआ पहिआ" तुच्छ ॥समझे जाने वाले॥ किन्तु बलशाली व्यक्ति का प्रतीक है, जो अन्याय और अत्याचार के विरूद्ध अचूक साधन है । ॥2॥

पौराणिक प्रतीकों में "चक्रव्यूह" और "अभिमन्यु" साठोत्तरी कविता के अत्यन्त लोकप्रिय प्रतीक हैं । धर्मवीर भारती और कुंवर नारायण की कविताओं के अतिरिक्त इन प्रतीकों को लेकर श्री राम वर्मा ने "चक्रव्यूह" शीर्षक कविता लिखी। ॥3॥

साठोत्तरी कविता के अन्य पौराणिक प्रतीकों में धृतराष्ट, "लाक्षागृह", ॥विजय देवनारायण साही की कविता॥ "मछली घर" । ॥4॥

बृहन्नला ॥धर्मवीर भारती की कविता॥ परीक्षित, नाग, एवं जनमेजय। ॥5॥

महाभारत के अश्वत्थामा, गान्धारी, युयुत्सु आदि चरित्र ॥अन्धायुग-धर्मवीर भारती॥ राधा और कृष्ण ॥कनुप्रिया॥ धर्मवीर भारती दक्ष-यज्ञ ॥चक्रव्यूह - कुंवर नारायण॥ दधीचि की हड्डियाँ । ॥6॥

सम्पति ॥धूप के धान - गिरिजा कुमार माथुर॥ । ॥7॥

शम्भु धनु, । ॥8॥

कृष्ण, कालिय दह, कालिय नाग, । ॥9॥

अर्जुन, कुरू क्षेत्र, गान्डीव । ॥10॥

॥1॥ इन्द्रधनु रौंदे हुए ये - अज्ञेय - पृ. 34.
॥2॥ आधुनिक हिन्दी काव्य में अप्रस्तुत विधान - नरेन्द्र मोहन - पृ. 250.
॥3॥ संक्रान्त - कैलाश बाजपेयी - पृ. 41.
॥4॥ मछली घर - विजय देव नारायण साही - पृ. 41-42.
॥5॥ संक्रान्त - कैलाश वाजपेयी - पृ. 41.
॥6॥ चक्रव्यूह - कुंवर नारायण - पृ. 107.
॥7॥ धूप के धान - गिरिजा कुमार माथुर - पृ. 71.
॥8॥ शिला पंख चमकीले - गिरिजा कुमार माथुर - पृ. 87.
॥9॥ सूर्य का स्वागत - दुष्यन्त कुमार - पृ. 82.
॥10॥ अतु कान्त - लक्ष्मीकान्त वर्मा - पृ. 18-21.

विदेशी पौराणिक प्रतीकों में सब से अधिक लोकप्रिय होने वाला प्रतीक है "सलीब" इसका उपयोग प्रयोगवादियों से लेकर नवीनतम पीढ़ी के कवियों तक ने किया है । और नयी कविता का एक रूढ़ प्रतीक हो गया है । अज्ञेय की निम्नलिखित पंक्ति में "सलीब" नियति का प्रतीक है ।

मैं अपने ही नहीं, तुम्हारे भी सलीब का
वाहक हूँ । §1§

प्रयोगवादी तथा साठोत्तरी कविता में ऐतिहासिक, धार्मिक, वैज्ञानिक, दार्शनिक, राजनैतिक आदि क्षेत्रों से गृहीत प्रतीकों की संख्या बहुत कम है । इस प्रकार के प्रतीकों की संख्या बहुत कम है । इस प्रकार के प्रतीकों की दृष्टि से गिरिजा कुमार माथुर की कविताएँ "पहिये" "पृथ्वी कल्प" नरेश मेहता की कविता "समय देवता" श्रीकान्त वर्मा की "खैबर" "हूण" "सिंहद्वार" "ग्रैंड ट्रंक रोड", "जोसेफ अब्रुकुंआ" आदि अज्ञेय की "असाध्य वीणा" "हिरोशिमा" आदि कुछ कविताएँ उल्लेखनीय हैं ।

विज्ञान एवं उद्योग के कुछ प्रतीक सायास लाये गए है । अभी तक वे संस्कार नहीं बने हैं । इसलिए वैज्ञानिक शब्दावली कविता में प्रयुक्त होकर काव्य-प्रतीकों में परिणत नहीं हो पाती है । एक उद्धरण दृष्टव्य है :-

हो गया है फिशन अणु का
परम ब्रह्म अनादि मनु का
xxx
ब्रह्म ने भी खूब बदला नाम
लोक-हित में पर न आया काम । §2§

नयें कवियों के प्रतीकों का मुख्य स्त्रोत प्रकृति ही है । गुलाब का फूल, कमल, नदी, चाँदनी, काला भैंसा, दीप, सांप, ताल, पुरवाई, बरगद, धूप, आसमान, अग्नि शिखा, हिम, प्रस्तर, उषा, निशा, झरना, झील, बवन्डर, लू, सुनहले पंखों वाला पक्षी, पृथ्वी, सागर, पानी, नाव, सूरज, मछली आदि सैंकड़ों प्राकृतिक प्रतीक नयी कविता में प्रयुक्त हुए है । कविता में इनके प्रयोग नवीन है ।

---

§1§ इन्द्र धनु रौंदे हुए ये - डॉ० अज्ञेय - पृ. 36.
§2§ धूप के धान - गिरिजा कुमार माथुर - पृ. 73.

छायावादी कविता में अज्ञेय की कविता "नदी के द्वीप" के इन अंशों में "द्वीप" व्यक्ति का प्रतीक है, और नदी समाज का । इस कविता के कुछ अंश देखिए :

हम नदी के द्वीप हैं ।
हम नहीं कहते कि हम को छोड़कर स्त्रोतस्विनी बह जाय ।

xxx

किन्तु हम हैं द्वीप ।
हम धारा नहीं है ।
स्थिर समपर्ण है हमारा । हम सदा से द्वीप है स्त्रोतस्विनी के ।
किन्तु हम बहते नहीं हैं । क्योंकि बहना रेत होना हैं ।

xxx

द्वीप हैं हम ।
यह नहीं है शाप । यह अपनी नियति है । §1§

नयी कविता में विभिन्न पौराणिक, प्राकृतिक प्रतीकों के माध्यम से परम्परा का, समाज का नियन्त्रण अस्वीकृत किया गया है । शकुन्त माथुर की निम्नलिखित पंक्तियों में "गन्दी झीलें" रूढ़िग्रस्तता का प्रतीक है, "चश्मा" व्यक्ति का और "ताजा नया पानी" नयी चेतना का – एक उद्धरण द्रष्टव्य है :-

डुबता गन्दी झीलें
बढ़ रहा है
आज यह चश्मा
लिये ताजा नया पानी । §2§

साठोत्तर कवि आज के समाज को किस रूप में स्वीकार करता है, अज्ञेय जी की इन पंक्तियों को देखिए :-

यह द्वीप अकेला स्नेह भरा है,
गर्व भरा मदमाता, पर इसको भी पंक्ति को दे दो । §3§

व्यक्ति के विश्वासों, आशा-आकांक्षाओं को कुचलने वाले समाज के लिए धर्मवीर भारती ने"ठंडा लोहा" में प्रतीक का प्रयोग किया है । §4§

---

§1§ कवितान्तर – सं. जगदीश गुप्त – पृ. 4-5.
§2§ दूसरा सप्तक – सं. अज्ञेय – पृ. 53.
§3§ कवितान्तर – सं. जगदीश गुप्त – पृ. 3.
§4§ ठन्डा लोहा तथा अन्य कविताएँ – धर्मवीर भारती – पृ. 9.

नयी कविता में स्वप्न-प्रतीकों की एवं फन्तासीय बिम्बात्मक प्रतीकों की प्रचुरता का यही कारण है । व्यक्तिवादी अस्तित्व चेतना, जिजीविषा, सत्यान्वेषण आदि के विभिन्न सन्दर्भों में अज्ञेय ने "मछली" के प्रतीक का बहुत उपयोग किया है । §1§

व्यक्तिवादी चेतना, नगरीकरण की प्रवृत्ति का प्रसार, पश्चिम के मुक्त समाज से सम्पर्क एवं फ्रायडीय मनो वैज्ञानिक अनुसंधानों आदि ने मिलकर प्रयोगवादी एवं नयी कविता को काम प्रतीक बहुल बना दिया है । काम प्रतीकों की ऐसी प्रचुरता हिन्दी कविता में पहले कभी नहीं रही । काम प्रतीकों के रूप में कुछ रूढ़ प्रतीकों का उपयोग जमकर हुए है । कुछ उद्धरण द्रष्टव्य है :-

1. घिर गया नभ, उमड़ आये मेघ काले
भूति के कम्पित उरोजों पर झुका-सा
विशद, श्वा साहत, चिरातुर,
छा गया इन्द्र का नीला वक्ष
बज्र-सा, यदि तड़ित से झुलसा हुआ-सा । §2§

2. सो रहा है झोंप अधियाली नदी की जांघ पर
डाह से सिहरी हुई यह चांदनी
चोर पैरों से उझक कर झाँक जाती है । §3§

प्रेम भावना के लिए चाँदनी और वासना के लिए "काला भैंसा" ऐसे काम प्रतीक है । §4§

अधिकांश काम प्रतीक प्रकृति से लिये गये हैं, नये काम प्रतीक भी प्रकृति से ही लिये गये हैं । एक उदाहरण देखें :-

दो पंखुरियां
झरी लाल गुलाब की, तकती पियासी
पिया-से ऊपर झुके उस फूल को । §5§

शमशेर बहादूर सिंह में भी अज्ञेय के समान बहुत से काम प्रतीक मिलते हैं । वे अज्ञेय की अपेक्षा अधिक उलझे हुए तथा दुरूह हैं । §6§.

---

§1§ कवितान्तर - सं. जगदीश गुप्त - पृ. 11 - "आंगन के पार द्वार"-अज्ञेय-पृ. 8-10.
§2§ तार सप्तक - सं. अज्ञेय - पृ. 282.
§3§ कविश्री, अज्ञेय - पृ. 20.
§4§ माध्यम मैं - शम्भूनाथ सिंह, "चाँदनी की वर्षगांठ" कविता - पृ. 22.
§5§ पूर्वा - अज्ञेय - पृ. 212.
§6§ आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियाँ - डॉ. नामवर सिंह - पृ. 168.

वीरेन्द्र कुमार जैन §शून्य पुरूष और वस्तुएँ" तथा जगदीश गुप्त §युग्म§ में यौन-प्रतीकों की प्रचुरता है । किन्तु उनके यौन-प्रतीकों का स्रोत्र भी प्रकृति ही है । नई कविता के यौन-प्रतीकों का मूल स्रोत्र भी प्रकृति ही है ।

आधुनिक युग का साधारण व्यक्ति यौन वर्जनाओं का पुंज है । आज के मानव का मन यौन परिकल्पनाओं से लदा हुआ है, और वे कल्पनाएँ सब दमित और कुन्ठित हैं । §1§

साहसिकता और अस्वीकार के आक्रोश के साथ यौन वर्जनाओं ने मिलकर साठोत्तर कविता के एक अंश को काम-प्रतीकमय बना दिया है । इन कवियों ने भी अपने काम प्रतीक प्रकृति से ही लिये हैं, किन्तु वे प्रकृति से गृहीत नये पदार्थ और प्राणी हैं । ऐसे प्रतीक कम हैं । जिनमें शिष्ट सौन्दर्य बोध हों । "श्याम परमार" की निम्नांकित पंक्तियों में शिष्ट सौन्दर्य बोधमय यौन प्रतीक हैं । एक उद्धरण द्रष्टव्य है :-

बड़ी-सी आँख का काजल
फिसल कर बह गया ।
कोई रात जी भर
मोती को दबाये
चमक को निगलती सीप की परतें
हरि जुआरी-सी थकी
गंवाकर कोष । §2§

मिथुन "शीर्षक इस कविता में "मोती" सतीत्त्व का "सीप की परतें" योनि की दोनों भित्तियों की "कोष" सतीत्त्व के साथ जुड़ी आकांक्षाओं का प्रतीक है, ये प्रतीक छायावाद से लेकर नई कविता तक के यौन-प्रतीकों की अपेक्षा अधिक खुले हुए एवं साहसपूर्ण हैं । किन्तु युवा कविता में ऐसे यौन प्रतीकों की अधिकता है, जो विभिन्न कामांगों और काम क्रियाओं को प्रतीकित करते हैं, कुछ उदाहरण देखें :

1. एक धधकती लावे की नदी में
   चील की तरह झपट्टा मारकर
   मैं इतिहास को नकारता उस गर्म एकान्त में प्रवेश कर जाता हूँ । §3§

---

§1§ तार सप्तक - सं. डॉ0 अज्ञेय - पृ. 278.
§2§ प्रारम्भ - सं. जगदीश चतुर्वेदी - पृ. 135.
§3§ निषेध - सं. जगदीश चतुर्वेदी - पृ. 27.

2. एक छोटा-सा गिरगिट कभी-कभी मारता है मुंह और
नोंच लेता है बाल । केवल कसमसाती है खाल और
तन जाती हैं रानें । शेष रह जाता है अन्धकार, एक
काला लाल जीभ वाला वकासुर खोलता है मुंह और
लीलता है, गर्द में, और कन्धे और वक्ष । §1§

xxx

3. हर वर्ष शिथिल केंचुए निकालती हैं
अपने कछुओं और केंचुओं को सिखाती हैं
बिलों में शिकार पकड़ना । §2§

xxx

4. रात भर एक तनहीन टांग तम्बूरे को बजाती रही ।
सेवों की जोड़ी विस्तरे पर रखी हुई ।
छिद्रित मोम को हाथ से छूते हुए
सिर झुकाये खड़ा कोई । §3§

पहले उदाहरण में "धधकती लावे की नदी गर्म एकान्त दूसरे उदाहरण में वंकासुर तीसरे उदाहरण में "बिल" चौथे उदाहरण में छिद्रित मोम स्त्री की योनि के प्रतीक हैं । दूसरे उदाहरण में "गिरगिट" पुरूष-लिंग का प्रतीक है, चौथे उदाहरण में "सेवों" की जोड़ी" स्त्री के स्तनों के प्रतीक हैं । तीसरे उदाहरण में "कछुए" और केचुएँ ऐसे पुरूषों के प्रतीक है, जो दब्बू, क्षुद्र और नगण्य है । §4§

साठोत्तरी काव्य की साम्यवादी चिन्तन की प्रेरणा से तत्कालीन कवियों के आक्रोश का लक्ष्य पूँजीपति वर्ग हो गया तथा सहानुभूति के पात्र बने दलित किसान एवं श्रमिक वर्ग जो धनपतियों की धनलोलुपता एवं आर्थिक एकाधिपत्य के कारण अभावों के चक्र में निरन्तर पीसे जा रहे हैं । अतः स्वभावतः असुरत्व के पौराणिक-प्रतीक का जो वस्त्र अब तक विदेशी शासकों को पहनाया जा रहा था, उससे इन धनपतियों को आभूषित किया जाने लगा । मजदूर और किसान जैसे सर्व हारा वर्ग सुर और नर है । आर्थिक दृष्टि से समाज को दो श्रेणियों में विभाजित करके देखने वाले कवियों की रचनाओं में यह प्रतीक अधिक आया है ।

---

§1§ निषेध - सं. जगदीश चतुर्वेदी - पृ. 37.
§2§ भय का सैलाब - नीलम सिंह - पृ. 12.
§3§ चाकू से खेलते हुए - सौमित्र मोहन - पृ. 13.
§4§ आधुनिक हिन्दी कविता का अभिव्यंजना - शिल्प - डॉ. हरदयाल - पृ. 117.

एक उद्धरण दृष्टव्य है :-

जागो दधीचि की अमर अस्थि
फिर से सुरत्व का मूल प्रश्न
सामूहिक शक्ति पुकार उठे
हो जाएगा यह वृत्र भग्न । (1)

रांगेय राघव की इन पंक्तियों में सुर मजदूर किसान वर्ग के, वृत्रासुर पूँजीपति वर्ग का तथा "दधीचि की अस्थि" क्रान्ति का प्रतीक है । इसी तरह पुराणों के प्रतीक "आततायी" चरित्र को पूँजीपति-वर्ग के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत किया गया है :-

शक्ति लग आहत पड़ा है, आज भारत
रो रहा है राम सत्यों का प्रदर्शक
भूल मत संजीवनी है आज जनता
रावणों का ध्वंस ही है लक्ष्य प्रेरक
सेतु बाँधेगें अतल पर धीर निश्चय
आह से पाषाण भी चिल्ला उठे हैं । (2)

साठोत्तरी विचार धारा के कवियों में शोषक वर्ग के प्रति घृणा और शोषित वर्ग के उद्धार का मार्ग क्रान्ति है, ओजपूर्ण पौराणिक प्रसंग तथा पात्र इस वर्ग के कवियों की कल्पना को अधिक उद्वेलित करते है । इसीलिए रौद्र-शिव का अनेक रचनाओं में प्रतीकात्मक प्रयोग हुआ है । "नरेन्द्र शर्मा" की इन पंक्तियों में शिव के तांडव नृत्य को क्रान्ति का प्रतीक बताया है :-

नाचो शिव इस निर्धन जग पर
अन्यायी के आडम्बर पर । (3)

इसी तरह अनेक कवियों ने कृष्ण के अनेक पक्षों को लेकर क्रान्तिकारी कविताओं की रचना की, "दिनकर की कविता में, उन्होंने "कालियानाग" शोषक वर्ग का प्रतीक है, तथा कृष्ण की "बाँसुरी वादन" जन-जन की मुक्ति का गान है । कृष्ण द्वारा कालियानाग को बाँधना प्रतीक के रूप में साधारण जन के शोषक वर्ग पर विजय प्राप्त करना है, एक उदाहरण देखें :-

---

(1) चुनौती, पिघलते पत्थर - रांगेय राघव - पृ. 19.
(2) चुनौती - पिघलते पत्थर - रांगेय राघव - पृ. 19.
(3) प्रभात फेरी - नरेन्द्र शर्मा - पृ. 103.

झूमे जहर चरण के नीचे मैं उमंग में गाऊँ
तान-तान फण व्याल कि मैं तुम पर बाँसुरी बजाऊँ ।
xxx
विषधारी । मन डोल कि मेरा आसन बहुत बड़ा है,
कृष्ण आज लघुता में भी साँपों से बहुत बड़ा है
आया हूँ बांसुरी-बीच उद्धार लिये जनगण का,
फन पर तेरे खड़ा हुआ हूँ भार लिये त्रिभुवन का ।
बढ़ा-बढ़ा नासिका रन्ध्र में मुक्ति-सूत्र पहनाऊँ
तान-तान फण-व्याल की तुझ पर मैं बांसुरी बजाऊँ । §1§

प्रगतिवादी कवियों ने "स्वप्न" के भी अनेक पौराणिक प्रतीकों को व्यक्त किया है, इन पंक्तियों में ब्रज के कुंजों में कृष्ण की बाँसुरी-सुर को क्रान्ति के स्वर के रूप में देखना पौराणिक सन्दर्भ का नितान्त नवीन प्रयोग है । एक उद्धरण द्रष्टव्य है :-

गूँजेगी दूर कहीं कुंजों में मरण वेणु
छायेगी गोपथ पर करूणा की कनक रेणु
आयेगी जीवन की सन्ध्या जब बनी धेनु
रहस-रहस रंभा मुक्ति गीत गाती हुई । §2§

पौराणिक प्रतीकों के दूसरे अनेक रूप है, जिसमें भावादर्श के विपरीत सन्दर्भों में पौराणिक-चरित्रों तथा कथा प्रसंगों का प्रयोग नयी कविता में हुआ है । यह पौराणिक प्रतीक सुलझे अर्थों से जटिल अर्थों की ओर बढ़नें का दिशा संकेत है, जिसके मूल में बौद्धिकता से उत्पन्न धर्म निरपेक्ष तथा विद्रोह की भावना है, जो कवि को पुराण के विविध प्रसंगों एवं पात्रों का, उसके धार्मिक एवं पुराण पर आधारित अर्थों के विपरीत अर्थों से संयुक्त करके देखने की दृष्टि प्रदान करता है । अनेक प्रकार की महानताओं के वाहक राम तथा द्रोण को प्रगतिवादी कवि "रांगेय राघव" अत्याचारी तथा सामंती वर्ग के रूप में देखते हैं, जो अपने स्वार्थ के लिए शम्बूक तथा एकलव्य जैसे निर्धन एवं पीड़ित वर्ग की निरीहता का उपयोग करते रहे हैं । एक उद्धरण द्रष्टव्य है :-

मैं वही शम्बूक हूँ
तूने दिया था रोक उस दिन
स्वर्ग पथ पर मुझे जाते देख
मैं वही एकलव्य हूँ

---

§1§ नील कुसुम - दिनकर - पृ. 11.
§2§ पलाशवन - नरेन्द्र शर्मा - पृ. 24.

कि धनुर्धारी वीर अर्जुन
डर गया था
और तूने ले लिया था अँगूठा
याद रख । {1}

जनशक्ति की गंगाधारा के मार्ग में अवरोधक शिव की जटाओं को "सुमन" ने इन पंक्तियों में चुनौती दी है :-

आज भगीरथ सफल श्रम
ध्येय पूर्ण बना रहा है
आज जन गंगा प्रवाहित
वेग बढ़ता जा रहा है

ढह रहे हैं स्वप्न कल के
चूर्ण हैं चट्टान के कण
है कहाँ शिव की जटाएँ
रोक ले जो एक भी क्षण । {2}

शिव मंगल सिंह "सुमन" रचित इन पंक्तियों में युगीन यथार्थ के परिपक्ष्य में मानवी मूल्यों के पतन को चित्रित करने के लिए व्यास, मुनि, भीम, अर्जुन, हरिश्चन्द्र, द्रौपदी, शैव्या, शची, को पौराणिक रूप से भिन्न सन्दर्भों में प्रस्तुत किया है । एक उदाहरण देखें :-

व्यास मुनि को धूप में रिक्शा चलाते,
भीम अर्जुन को गधे का बोझ ढोते देखता हूँ
सत्य के हरिश्चन्द्र को अन्याय घर में
झूठ की देते गवाही देखता हूँ
द्रौपदी औ शैण्या और शची को
रूप की दुकान खोल
लाज को दो-दो टके में बेचता देखता हूँ । {3}

नयी कविता में अन्तर्प्रेरणा के धरातल पर पौराणिक प्रतीक दो रूपों में अपना कार्य करते हैं, एक ओर विघटित मूल्यों की अभिव्यक्ति के माध्यम के रूप में इनका प्रयोग हुआ है, दूसरी ओर पौराणिक प्रतीकों का आधुनिक सन्दर्भों में धर्म-निरपेक्ष तथा पुराण विरोधी रूप में प्रयोग होना ही परम्परागत मूल्यों के विघटन का प्रतीक है । {4}

{1} पिघलते पत्थर - आततायी - रांगेय राघव - पृ. 115.
{2} प्रलय-सृजन - शिवमंगल सिंह "सुमन" - पृ. 6.
{3} विश्वास बढ़ता ही गया - शिवमंगल सिंह "सुमन" - पृ. 67.
{4} आधुनिक हिन्दी काव्य और पुराण कथा - डॉ. मालती सिंह - पृ. 276.

दुर्वासा ऋषि को पौराणिक सन्दर्भों से च्युत करके पन्नों के दुर्वासा के रूप में और पंडों की हवेली को पृथुल गणेश के रूप में देखना ही मूल्यों के विखन्डन का संकेत देता है । कहीं नया कवि अपनी कुन्ठा को क्वांरी कुन्ती के प्रतीक का वस्त्र पहनाता है । एक उदाहरण द्रष्टव्य है :-

मेरी कुंठा क्वांरी कुन्ती
बाहर आने दूँ तो लोक लाज मर्यादा
भीतर रहने दूँ तो घुटन
सहन से ज्यादा
मेरा यह व्यक्तित्व
सिमटने पर अमादा । ﴾1﴿

प्रगतिवादी कवियो ने पौराणिक प्रतीक को कहीं-कहीं पर उन्होंने विद्रोह की प्रत्यक्ष अभिव्यक्ति की है । "विजय देव नारायण साही" की इन पंक्तियों में पुरानी मान्यताओं को प्रतीक रूप में गुरू अगस्त्य के प्रति विद्रोहात्मक तेवर को व्यंजित किया है । एक उदाहरण द्रष्टव्य है :-

कितने अगस्त्य आयेंगे गुरू का वेश धरे,
आशीष वचन कहने वाले
चिरं विनत तुम्हारा मस्तक यों ही झुका छोड़
ये गुरू पर वापस नहीं लौट कर आयेंगे । ﴾2﴿

पुरानी पीढ़ी अपने थोथे आदर्शों, झूठी मान्यताओं बेकारी भ्रष्टाचार के चक्रव्यूह में अभिमन्यु जैसी अजन्मी पीढ़ियों को आत्मसंघर्ष एवं बाह्य संघर्ष में जूझने को विवश कर रही है, इसी तरह नयी आवाज रूपी लवकुश की अजन्मी पीढ़ी को कब तक बनवास मिलता रहेगा । इस प्रतीक के माध्यम से "कवि साही" की इन पंक्तियों में नयी पीढ़ी के विद्रोह की तीखी अभिव्यक्ति हुई है । प्रकान्तर से यह महानता की प्राचीन अवधारणाओं को भी चुनौती देती है । एक उदृधरण द्रष्टव्य है :-

कब तलक यह पूर्वजों से मिली प्रतिहिंसा
कब तलक अन्धे तपस्वी कब तलक
अजन्मी पीढ़ियों पर
कब तलक नतशीश कन्धों पर बढ़ा यह तीर्थ संयम ।
कब तलक यह हर नयी आवाज का बनवास ? ﴾3﴿

﴾1﴿ नयी कविता - श्री राम वर्मा - पृ. 199.
﴾2﴿ निकष - 3-4 - दुष्यन्त कुमार - पृ. 359.
﴾3﴿ नयी कविता-4, विजय देव नारायण "साही" - पृ. 200.

प्रगतिवादी कवियों ने कहीं-कहीं पर विद्रोह की भूमि पर व्यंगात्मक पौराणिक प्रतीक को भी उभारा है । यह वह समय था, जब सामाजिक, आर्थिक एवं मूल्यगत वैषम्य तथा आन्तरिक स्तर पर व्यक्तिगत कुन्ठा, निराशा, अनास्था एवं एकाकीपन की तीखी अभिव्यक्ति के लिए पौराणिक प्रतीकों के सहारे व्यंग-विपर्यय की सृष्टि करता है । इस सामायिक परिस्थितियों की विरूपता को "भारत भूषण अग्रवाल" ने किस तरह व्यक्त किया है । एक उद्धरण देखिए :-

कल रात मैंने स्वप्न देखा
मैनें देखा मेनका अस्पताल में नर्स हो गई है,
और विश्वामित्र ट्यूशन पढ़ा रहे हैं ।
उर्वशी ने डांस स्कूल खोल लिया है
नारद गिटार बजा रहे हैं
गणेश बिस्कुट खा रहे हैं
और बृहस्पति अंग्रेजी से अनुवाद कर रहे हैं । ﴾1﴿

इन पंक्तियों में मेनका, विश्वामित्र, नारद, गणेश, उर्वशी एवं बृहस्पति जैसे पौराणिक पात्रों को युगीन यथार्थ की पृष्ठभूमि में रख कर कवि ने बताया है, कि जीवन की वास्तविकताओं से जुझती आधुनिक युग की मेनका एवं उर्वशी अपनी आजिविका के लिए अस्पतालों में नर्स बनती हैं या डांस स्कूल खोल लेती हैं । आधुनिक युग के विश्वामित्र ट्यूशन पढ़ाने पर विवश हैं तथा बृहस्पति अंग्रेजी में अनुवाद करते है ।

व्यंगात्मक प्रतीक यांत्रिक सभ्यता की विषमताओं को अभिव्यक्ति प्रदान करने के लिए अधिक प्रयुक्त हुए है । एक ओर मशीनी युग कटु यथार्थ है, दूसरी ओर पुराणों की अलौकिकता । दो विपरीत स्थितियों को एक साथ संयोजित करके देखने के प्रयास में एक ओर पुराणों की अलौकिकता व्यंगात्मक लगती है । और दूसरी ओर मशीनी सभ्यता का यथार्थ अधिक तीखेपन से अभिव्यक्त हो जाता है । ﴾2﴿

मदन वात्स्यायन की इन पंक्तियों में आधुनिक युग की मशीनी सभ्यता से उत्पन्न महा प्रभुओं की महानता पर तीखा व्यंग्य किया है । पुराणों की अवतारवादी धारणा को आधुनिक सन्दर्भों में कवि ने किस प्रकार व्यक्त किया है । एक उदाहरण देखें:

﴾1﴿ आधुनिक हिन्दी काव्य और पुराण कथा - डॉ. मालती सिंह - पृ. 278.
﴾2﴿ आधुनिक हिन्दी काव्य और पुराण कथा - डॉ. मालती सिंह - पृ. 279.

मत्स्यावतार में उन्होंने जमशेदपुर के बड़े कारखानों को डूबने से बचाया था ।
कच्छपावतार में उन्हीं के कन्धों पर मन्दराचल द्वारा समुद्र मंथन से,
फाइब इयर प्लान निकाला था,
वाराह अवतार में उन्होंने राजस्थान को पिछड़ेपन से निकाला था,
हलधर रूप में ब्रह्म पुत्र नहीं बाँधी
बुद्धावतार में उन्होंने दूसरे सबों की निन्दा की
और कब कल्कि-अवतार लेकर कारखाने में पधारे थे । §1§

निराला ने "तुलसीदास" लिख कर जिस प्रकार उनके व्यक्तित्व को विद्रोहात्मकता के द्वारा पुणम्य बनाया वह मुझे अस्वाभाविक या अविश्वसनीय नहीं लगता है, जो विद्रोह किसी आस्था की धरती से नहीं उठता वह हवा में गुबार की तरह निरर्थक होकर खो जाता है, "शम्बूक" का विद्रोही स्वभाव भी उन गहरे मानव-मूल्यों की उपज है, जिनके आधार पर नयी कविता के आंदोलन-काल में नये मनुष्य की परिभाषा निर्मित हुई थी । एक उद्धरण देखें :-

मात्र हिंसा नहीं मानव न्याय
हैं अहिंसक और-और उपाय
दन्ड के हैं और बहुत विधान
शीघ्र जिनसे हो, किये का भान
व्यक्ति अपने आप, सहित विचार
कर सके अपराध निज स्वीकार
किन्तु वध है मृत्यु का वह दन्त
तुरंत करता चेतना का अन्त
जो न देता एक क्षण अवकाश
बुद्धि मन-तन सभी सत्यानाश । §2§

इसी तरह राम की वानर सेना मुडेरों पर रोटी की तलाश में है । आधुनिक युग के कृष्ण क्यूरियो मार्ट में अर्जुन की तलाश में है । जीवन के अभावों से जूझता आधुनिक युग का दुष्यन्त अँगूठी को मछली से निगलवाने की ऐयाशी नहीं दिखा सकता, अपितु अपनी प्रिया के स्मृति चिन्ह को गिरवी रखने को विवश है। §3§

आधुनिक युग का चालाक एवं यथार्थवादी कर्ण मृत्यु के भय से कवच कुन्डल का दान नहीं करता है । एक उद्धरण दृष्टव्य है :-

---

§1§ निकष - भाग-2 - मदन वात्स्यायन - पृ. 163.
§2§ शम्बूक - छिन्नशीश - जगदीश गुप्त - पृ. 72.
§3§ नयी कविता-4 - लक्ष्मीकान्त वर्मा - पृ. 117.

हम तो हैं वीर कर्ण
वीर कर्ण – मूर्ख नहीं ।
दान नहीं देंगे हम
कवच और कुन्डल हम कभी नहीं त्यागेंगे,
क्या मार जाएँगे ?
हम हैं कूटज्ञ कर्ण, धूर्त कर्ण, चतुर कर्ण
दानी नहीं । §1§

प्रगतिवादी तथा प्रयोगवादी कवियों ने यथार्थ के मध्य पौराणिक चरित्रों को रखकर तथा यथार्थ एवं आदर्श की दो विपरीत स्थितियों को समानान्तर स्थापित करके परम्परागत मूल्यों का विश्लेषण एवं परीक्षण किया है ।

निम्नांकित पंक्तियों में कवि न केवल जन्माष्टमी के दिन जन्में कृष्ण अर्थात् आधुनिक अवसरवादी व्यक्तियों की खोखली नैतिकता को उद्घाटित किया है, बल्कि पौराणिक कृष्ण के चरित्र की असंगतियों की ओर भी संकेत किया है । एक उदाहरण देखें :-

मैं कृष्ण हूँ ।
आज भी कोई जरासंध नगर घेर लेता है
मेरे पुरूषत्व को ललकारता है
मैं चुपचाप भाग निकलता हूँ
अर्जुन जब हारने लगते हैं
धोखे से भीष्म मरवा देता हूँ
असत्य को जिलाने के लिए
"अश्वत्थामा हतो" कहते शंख बजा देता हूँ
मैं कृष्ण हूँ
जन्माष्टमी की रात जन्मा हूँ । §2§

व्यक्ति के आत्मसंघर्ष एवं बाह्यसंघर्ष को चक्रव्यूह में घिरे अभिमन्यु के प्रतीक के माध्यम से प्रस्तुत करना सहअनुभूति का उदाहरण है । जीवन की विसंगतियों को झेलते हुए व्यक्ति की आत्म पीड़ा, निराशा, एकाकीपन तथा उसे झेलने की कटिबद्धता को अभिव्यक्त करने के लिए इस युग के कवियों "चक्रव्यूह" में घिरे एकाकी अभिमन्यु का प्रतीक सबसे अधिक ग्रहण किया है । श्री राम वर्मा एवं कुँवर नारायण की इन पंक्तियों में जीवन संघर्ष में पड़े आधुनिक मानव की विवशता की व्यंजना व्यक्त हुई है । एक उदाहरण देखें :-

---

§1§ निकष-2 – अजित कुमार – पृ. 56.
§2§ कल्पना, जुलाई-1957 – गंगाप्रसाद श्रीवास्तव – पृ. 20.

मेरा बाप अर्जुन नहीं था
मेरी माँ सुभद्रा नहीं थी
और मैं अभिमन्यु नहीं हूँ
इतने पर भी मुझ अबोध को
दुर्भेध चक्र में फाँस दिया गया है । ‖1‖

आज की युवा पीढ़ी काफी बेचैन है, चारों तरफ बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, देश की शासन व्यवस्था, नेताओं का नैतिक पतन, सरकारों का गिरना, बड़े पैमाने पर बेईमानी, सरकारी तंत्र की निष्क्रियता से मानव का जीवन बड़ा संघर्षमय बन गया है । और इसी संघर्ष को कवि ने कितने सहज ढंग से प्रस्तुत किया है । एक उद्धरण द्रष्टव्य है :-

यह गलत है
कि मेरा कोई निजी व्यक्तित्व है
यह गलत है
कि मेरे पिता पांडु हैं
जिनके अपरिमेय पौरूष से सूर्य इन्द्र आदि
विभिन्न रूपों में ग्रहण किया गया है
यह गलत है कि मेरी माँ कुन्ती है । ‖2‖
xxx
मैं एक खिलौना हूँ - सौदेश्य
द्वारिकाधीश कूटनीतिज्ञ कृष्ण या
महाभारत विजयी युधिष्ठिर का । ‖3‖

संघर्ष की ये परिस्थितियाँ न कम हुई है और न ही कम होने की कोई आशा है, बड़े-बड़े राष्ट्र अपनी शक्ति को बढ़ाने में लगे है, विज्ञान अपनी परम सीमा पर पहुँच चुका है, संघर्ष निश्चित है, इस लिए उसे झेलने के लिए तथा आत्मविश्वास को बढ़ाने के लिए अनेक पौराणिक-प्रतीकों के माध्यम से व्यक्त हुआ है, वह कहीं अपने को पिता द्वारा तिरस्कृत और अभिशापित नचिकेता के रूप में देखता है, जो कठोपनिषद के नचिकेता से भिन्न यमराज से परम्परागत मान्यताओं की निर्वीर्य मूर्तियों को तोड़ने का वरदान मांगता है । कवि कहता है कि :-

---

‖1‖ निकष-1 - श्रीराम वर्मा - पृ. 74.
‖2‖ चक्रव्यूह - कुंवर नारायण - पृ. 128.
‖3‖ कल्पना-मार्च-1957 - राजेन्द्र किशोर - पृ. 41-42.

अतः
ओ कालदेव
इस भूत से वर्तमान से महान
उस भविष्य का तीसरा वरदान मुझे दो,
कि वे मुझको नहीं
मेरी निष्ठा नहीं मेरी पीड़ा नहीं । §1§

महाभारत के युद्ध में लड़ना अभिमन्यु का दायित्व नहीं था, परिस्थितियों के नियति चक्र में पड़े अभिमन्यु को इस पैतृक युद्ध में लड़ने के लिए विवश होना पड़ता है, गर्भावस्था में ही चक्रव्यूह-प्रवेश के अधूरे ज्ञान से जैसे इस युद्ध के साथ बाँध दिया था । अभिमन्यु की इस विवशता एवं वीरता से भावात्मक तादात्म्य स्थापित करते हुए कुँवर नारायण ने जीवन के महासमर में पैतृक युद्ध को लड़ते हुए आधुनिक व्यक्ति के नियति विधान एवं आत्मविश्वास की प्रतीकात्मक व्यंजना की है । एक उद्धरण द्रष्टव्य है :-

कौन कब बन सकेगा कवच मेरा ?
युद्ध मेरा मुझे लड़ना
इस महाजीवन समर में अन्त तक कटिबद्ध
मेरे ही लिए यह व्यूह घेरा,
मुझे हर आघात सहना,
गर्भ निश्चित मैं नया अभिमन्यु पैतृक युद्ध । §2§

धर्मवीर भारती की इन पंक्तियों में आधुनिक व्यक्ति की अकिंचनता अथवा लघुता की महत्ता की प्रतीकात्मक व्यंजना महाभारत की महानताओं की भीड में नितान्त महत्वहीन से प्रतीत होने वाले "रथ के टूटे पहिए" के माध्यम से हुई है । एक उद्धरण द्रष्टव्य है :-

मैं रथ का टूटा पहिया हूँ
लेकिन मुझे फेंको मत ।
क्या जाने कब
इस दुसह चक्रव्यूह में
अक्षौहिणी सेनाओं को चुनौती देता हुआ
कोई दुस्साहसी अभिमन्यु आकर घिर जाय ।
xxx

---

§1§ कल्पना, मार्च-1957 - राजेन्द्र किशोर - पृ. 41-42.
§2§ चक्रव्यूह - कुंवर नारायण - पृ. 103.

मैं रथ का टूटा पहिया
उनके हाथों में ब्रह्मास्त्रों से लोहा ले सकता हूँ । §1§

साठोत्तरी कविता में नये सन्दर्भों के साथ नये प्रतीकों का प्रयोग भी जम कर हुए, यह वह समय था, जब कविता के क्षेत्र में पूर्ववर्ती काव्य-प्रतीकों से अलग एक नये प्रतीक योजना को निर्मित करना चाहते थे । अधिकांश प्रतीक वर्तमान राजनीतिक व्यवस्था की तीखी आलोचना करते हुए सामने आयें है । एक उदाहरण देखें :-

यह नया घड़ा किसका है । किसका है यह रिसता हुआ नया घड़ा ।
हमारे कुंए का मीठा पानी । तुमने नाली में बहाया है । §2§

यह नया घड़ा स्वतन्त्रता के बाद आयी नयी चेतना व्यवस्था का प्रतीक है । इस रिसते हुए घड़े से जो पानी निकल रहा है, वह हमारा परिश्रम, और उपलब्धि और मीठा पानी, असफलता, हताशा, और निराशा की नाली में जा चुका है ।

वर्तमान व्यवस्था को तो नागार्जुन ने "अजगर" का प्रतीक माना है, वे कहते है :-

अजगर को गुफा में घुसने दो
सब ठीक हो जाएगा । §3§

वर्तमान व्यवस्था को लेकर कई कवियों ने प्रतीकों के माध्यम से काफी गहरा प्रहार किया है, इनमें "भारत भूषण अग्रवाल" कृत "परिदृश्य"-1967 वेणु गोपाल कृत "भारत" 1972 में अशोक वाजपेयी कृत "जबरजोत" विशेष उल्लेखनीय है । भारत भूषण अग्रवाल ने वर्तमान व्यवस्था को "शनी ममवी" का प्रतीक बताया, जब कि "वेणु गोपाल" ने "मकान मालकिन" का प्रतीक कहा, और अशोक वाजपेयी ने "बड़ी-बी" का प्रतीक उद्घोषित किया । व्यंग्य तीनों कविताओं में भरपूर है, किन्तु बड़ा तीखा एवं शालीन । एक उद्धरण देखें :-

---

§1§ सातगीत - डॉ० धर्मवीर भारती - पृ. 93.
§2§ आवेग-9, दिनचर्या - डॉ० ऋतुराज - पृ. 10.
§3§ उत्तरार्ध-6, नवम्बर-1973.

संसद भवन में शहद का छत्ता लगा है
जिसकी मखियाँ फूलों से नहीं
घावों से मधु चूसती हैं
और रानी मक्खी कुछ नहीं करती
बस विंम कोट पहनती है । ॥।॥

वैसे साहित्य और कविता के क्षेत्र में इसकी चर्चा आजादी के कुछ दिनों बाद से ही प्रारम्भ हो चुकी थी, गाँधी जी के विचारधारा वाले अलग-थलग हो रहे थे, काँग्रेस सरकार किये गये वायदे से मुकर रही थी, आपसी लड़ाई काफी जोरों पर थी, काँग्रेस का ध्यान जनता की भलाई में कम किन्तु कुर्सी की तरफ ज्यादा था । वर्तमान स्थिति तो इतनी गिर चुकी है, कि जिसका वर्णन बड़ा ही भयानक और डरावना है । किन्तु इसकी चर्चा किये बिना साठोत्तरी कविता की प्रतीकात्मकता का अध्ययन किया जाना मुश्किल था, वैसे इसके पहले "मुक्ति बोध" ने कितने सार्थक प्रतीक साठोत्तरी कविता को दिया है । "मुक्ति बोध" जी विशिष्ट बिम्ब और उससे अधिक विशिष्ट प्रतीक की योजना करते है । तथा इसके साथ ही वे प्रतीक में कथा, गाथा, मिथ, बिम्ब, आदि की सृष्टि करते है । उन्होंने अपनी कविताओं में ब्रह्मराक्षस, ओरांग उटांग, रावण, गाँधी, सुभाष, तिलक, टालस्टाय, जैसे प्रतीकों की एक सांस्कृतिक पृष्ठभूमि बनाई है ।(इसके अलावा (उन्होंने) तटवृक्ष, पागल मनुष्य, तिलक, माँ, शिशु जैसे प्रतीकों का प्रयोग साठोत्तरी कविताओं में हुआ ।)

इस तरह साठोत्तरी युवा कवियों ने सामयिक सन्दर्भों के अनुकूल अनेक नये प्रतीकों, बिम्बों और मिथकों को अपनी काव्य-योजना में समाहित किया है, तथा साठोत्तरी कविता इनके द्वारा जीवन के विभिन्न क्षेत्रों के सत्य को खोजते है, युवा कवियों ने सामाजिक जीवन में व्याप्त, बेईमानी, तथा राजनीतिक, आर्थिक क्षेत्र में भी व्याप्त स्वार्थपरता को प्रतीकों, बिम्बों और मिथकों के माध्यम से सामने लाने की चेष्टा की है । और इसके साथ ही युग की परिस्थितियाँ, प्राकृतिक एवं सामाजिक वातावरण, ऐतिहासिक, घटनाक्रम, राष्ट्रीय-चेतना परिवेशगत दबाव एवं कवि की व्यक्तिगत रूचि आदि को इन प्रतीकों, बिम्बों के द्वारा साठोत्तरी कविता का विस्तार हुआ ।

॥।॥ एक उठा हुआ हाथ - भारत भूषण अग्रवाल - पृ. 54.